राष्ट्रीय छात्रशक्ति

वर्ष 2 ■ अंक 8 ■ नवम्बर 2018 ■ ₹10 ■ पृष्ठ 32

भारत के सरदार

मिशन साहसी

मिशन साहसी
पांच लाख छात्राओं ने
किया शौर्य का प्रदर्शन 12

बाबासाहेब डा॰ भीमराव
अम्बेडकर विराट एवं
बहु-आयामी व्यक्तित्व 19

NOW IT'S
SABARIMALA,
NEXT ON 'SECULAR
RADAR' IS AMARNATH 27

छात्रसंघ चुनाव

हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय छात्र संघ चुनाव में विजय के बाद प्रसन्न मुद्रा में नवनिर्वाचित छात्र संघ नेता व अन्य

हरियाणा के छात्रसंघ चुनाव में अभाविप को मिली अप्रत्याशित जीत के बाद प्रसन्नता प्रकट करते अभाविप कार्यकर्ता एवं छात्रसंघ के निर्वाचित नेता

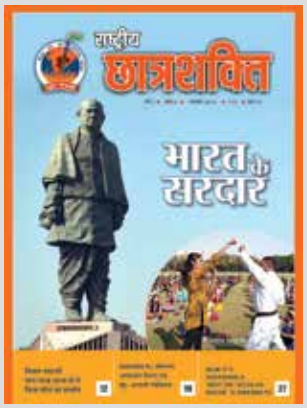

राष्ट्रीय
छात्रशक्ति
शिक्षा–क्षेत्र की प्रतिनिधि–पत्रिका

वर्ष 2, अंक 8
नवम्बर, 2018

संपादक
आशुतोष भटनागर
संपादक–मण्डल :
संजीव कुमार सिन्हा
अवनीश सिंह
अभिषेक रंजन
अजीत कुमार सिंह

संपादकीय पत्राचार :
राष्ट्रीय छात्रशक्ति
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नयी दिल्ली - 110002.
फोन : 011-23216298

chhatrashakti.abvp@gmail.com
www.facebook.com/rashtriyachhatrashakti
www.twitter.com/chhatrashakti1

स्वामी, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक **राजकुमार शर्मा** द्वारा 26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, आई.टी.ओ. के निकट, नयी दिल्ली - 110002 से प्रकाशित एवं ओशियन ट्रेडिंग कं., 132 एफ. आई. ई., पटपड़गंज इण्डस्ट्रियल एरिया, नयी दिल्ली-110092 से मुद्रीत।

इस अंक में

05 **भारत के सरदार**
गुजरात में सरदार सरोवर के निकट 31अक्तूबर को सरदार वल्लभभाई पटेल की प्रतिमा का अनावरण प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किया। यह प्रतिमा विश्व की सबसे ऊंची प्रतिमा है।

संपादकीय	04
नहीं रहे केन्द्रीय मंत्री व अभाविप के पूर्व राष्ट्रीय मंत्री अनंत कुमार	09
WOMEN EMPOWERMENT & ABVP	10
पांच लाख छात्राओं ने किया शौर्य का प्रदर्शन	12
हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय में अभाविप की ऐतिहासिक जीत	14
बाबासाहेब डा॰ भीमराव अम्बेडकर विराट एवं बहु–आयामी व्यक्तित्व	19
हरियाणा में अभाविप ने बजाया जीत का डंका	22
पहचान की पहली प्राथमिकता: गांधी और गाय	23
कानून बनाकर हो भव्य राम मंदिर का निर्माण	25
NOW IT'S SABARIMALA, NEXT ON 'SECULAR RADAR' IS AMARNATH	27
केरल : अभाविप कार्यालय पर पेट्रोल बम से हमला	28
परिचर्चा : टीपू की जयंती और पटेल की प्रतिमा का विरोध!	29

वैधानिक सूचना : राष्ट्रीय छात्रशक्ति में प्रकाशित लेख एवं विचार तथा रचनाओं में व्यक्त दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

संपादकीय

कहा जाता है कि यदि आप समाधान का हिस्सा नहीं हैं तो आप स्वयं समस्या हैं। समस्या की दुहाई देकर सरकार को कठघरे में खड़ा करना और इस नकारात्मकता में से अपने उद्देश्यों की पूर्ति के प्रयास करना, यह राजनैतिक दल जहां अहिंसक तरीके से करते हैं वहीं हिंसा के बल पर आतंकी और नक्सली भी। लेकिन वे कभी भी समाधान का हिस्सा बनने की कोशिश नहीं करते।

अभाविप अपना दृष्टिकोण सदैव रचनात्मक रखती है जिसका परिणाम है कि वह हमेशा समाधान का हिस्सा बनती है। देश में छात्राओं और युवतियों के साथ छेड़-छाड़ और हिंसा का दौर जब बढ़ा तो मानो सरकार विरोधियों ने आसमान सर पर उठा लिया। लेकिन परिषद ने इसके लिये सकारात्मक पहल करते हुए छात्राओं को आत्मरक्षा के गुर सिखा कर उन्हें समर्थ बनाने का निश्चय किया। इसी संकल्प में से "मिशन साहसी" की कल्पना उत्पन्न हुई और जब वह धरातल पर उतरी तो देश भर में 5 लाख से अधिक छात्राओं के प्रशिक्षण का कार्य पूरा हुआ।

सकारात्मक दृष्टिकोण यही है कि जो कमजोर हो उसे सक्षम और समर्थ बना कर स्वाभिमान से जीने योग्य बना दिया जाय, अतिरेकी शक्तियों को संदेश दिया जाय कि सत्य और न्याय के मार्ग पर चलने वालों के साथ समाज खड़ा है। परिषद का आज का यह प्रयास इतिहास के अनेक कालखण्डों में महापुरुषों द्वारा दिखाये गये मार्ग का अनुवर्तन है। पिछली शताब्दी में समाज के आखिरी पायदान पर खड़े वंचित और शोषित समाज का सफल नेतृत्व कर उन्हें स्वाभिमान से सर उठा कर जीने का साहस दिया। उनके महापरिनिर्वाण दिवस, जिसे देश समता दिवस के रूप में मनाता है, पर उन्हें भाव-भीनी श्रद्धांजलि।

बाबासाहब के समकालीन और मंत्रिमण्डल में उनके सहयोगी रहे सरदार वल्लभ भाई पटेल ने देश को एक सूत्र में बांधने का यशस्वी कार्य किया। उनके ही प्रयत्न से 550 से अधिक रियासतें भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था में शामिल होने के लिये तैयार हो गयीं। पीढ़ियों से चलती आ रही राजशाही, उसके असीमित अधिकारों और अथाह संपत्ति को छोड़ कर अपनी संप्रभुता को भारत में विलीन करने का फैसला सरल न था, किन्तु यह सरदार वल्लभ भाई पटेल की राजनैतिक सूझ-बूझ, संवादकुशलता और प्रशासनिक कौशल था कि उन्होंने यह चमत्कार कर दिखाया।

सभी भारतीय महापुरुषों की भारत की संकल्पना समान थी जिसमें भारत में फिर से रामराज्य लाने का संकल्प था। किन्तु कालक्रम में राम के जन्मस्थान को ही विवाद का विषय बना दिया गया। करोड़ों भारतीय के आराध्य राम के अस्तित्व पर ही सवाल उठाये जाने लगे। पुरातात्विक खुदाई में भी प्रमाण मिलने के बाद समाज का एक धड़ा राम मंदिर के निर्माण में बाधा उत्पन्न कर रहा है। निस्संदेह यह साम्प्रदायिक वैमनस्य की राजनीति का निम्नतम आयाम है । देश जब पुनर्जागरण के एक नये दौर से गुजर रहा है, कोटि-कोटि भारतीयों के आराध्य भगवान राम के जन्मस्थान पर भव्य मंदिर का निर्माण स्वाभिमान की अभिव्यक्ति बनेगा।

शुभकामना सहित,

संपादक

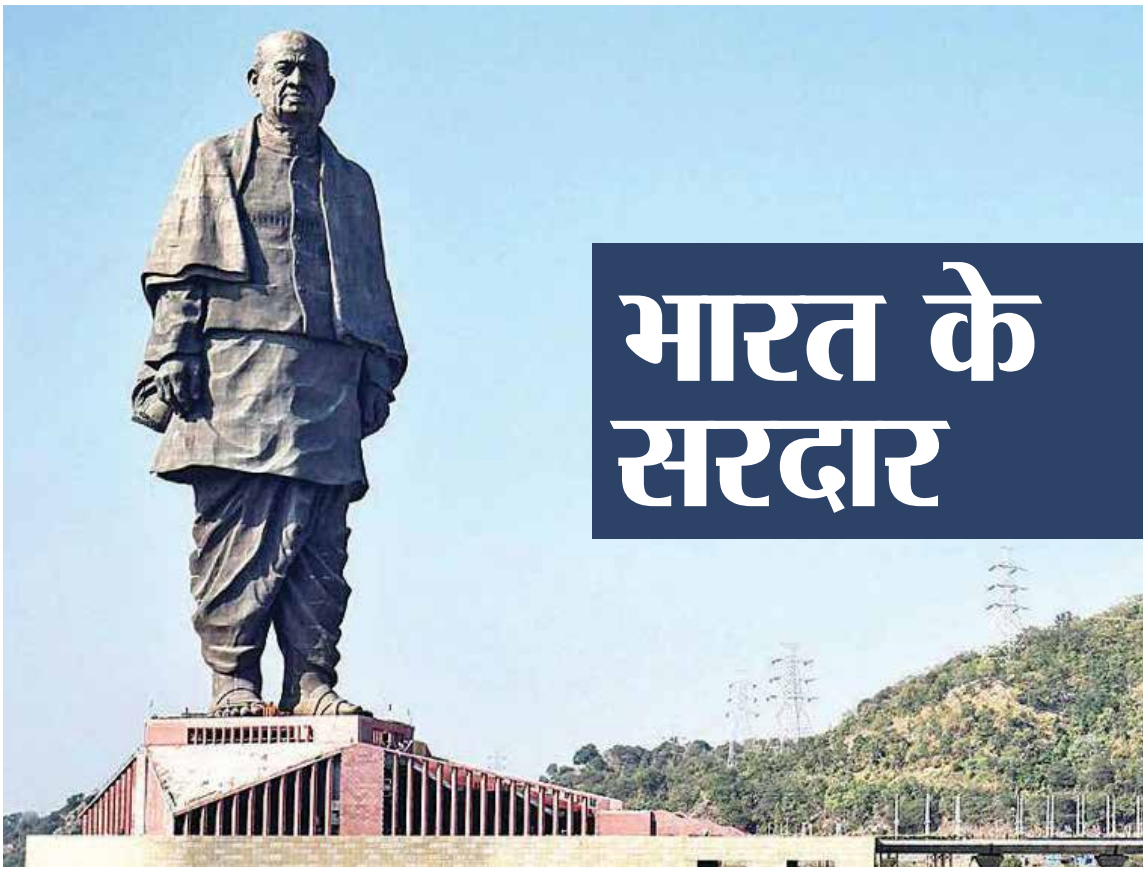

भारत के सरदार

| आशुतोष भटनागर |

गुजरात में सरदार सरोवर के निकट 31अक्तूबर को सरदार वल्लभभाई पटेल की प्रतिमा का अनावरण प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किया। यह प्रतिमा विश्व की सबसे ऊंची प्रतिमा है। इसे स्टैच्यू ऑफ यूनिटी का नाम दिया गया है। प्रतिमा को गुजरात के नर्मदा जिले के केवड़िया में सरदार सरोवर नर्मदा बाँध से तीन किलोमीटर दूर साधु बेट नामक टापू पर स्थापित किया गया है। स्वतंत्रता के पश्चात देश को एक राजनैतिक-प्रशासनिक व्यवस्था के अंतर्गत लाने का जो अभूतपूर्व कार्य सरदार पटेल ने किया था, उसके प्रति देश के कृतज्ञता ज्ञापन का यह अवसर था।

सरदार के योगदान का मूल्यांकन करते हुए भारत के इतिहास, तत्कालीन परिस्थितियां और उनके समकालीन लोगों की भूमिका का भी स्मरण रखना होगा। यह याद रखना होगा कि भारत की जिस एकात्मता का उल्लेख हम करते हैं वह राजनैतिक कम, सांस्कृतिक अधिक है। राजनैतिक रूप से देश में अधिकांश छोटे राज्य रहे, भारत उनके समूह के रूप में था जिसे भारत के सभी निवासी अपने राष्ट्र के रूप में हजारों वर्षों से पहचानते थे। भारत राष्ट्र समान संस्कृति और समान जीवनमूल्यों में विश्वास रखने वाले समाज का समुच्चय था जिसके अंग के रूप में यह छोटे राज्य अपने-अपने अधिकार क्षेत्र में शासन किया करते थे। इन राजाओं के मध्य परस्पर संघर्ष भी चला करते थे किन्तु इन संघर्षों का असर सामान्य जन-जीवन पर नहीं पड़ता था। पराजित राज्य के राजा और नागरिकों के नरसंहार का अनुभव भारतीयों को तब हुआ जब विदेशी आक्रांताओं के आक्रमण से सामना हुआ।

देश के इतिहास में अनेक बड़े राजाओं का उल्लेख भी मिलता है। इन्होंने अपने शौर्य का प्रदर्शन करते हुए भारत की प्राकृतिक सीमाओं के अंदर एक बड़े भू-भाग पर अपना नियंत्रण स्थापित किया और चक्रवर्ती सम्राट

कहलाये। इसके चलते युद्ध भी हुए और जन-हानि भी, किन्तु युद्ध के बाद प्रजा का पोषण, यह सभी राजाओं ने निष्ठापूर्वक किया। अलग-अलग कालखण्डों में देखें तो पौराणिक काल में इन सम्राटों के अपने नैतिक मूल्यों के बल पर सर्वस्वीकृत होने का उल्लेख मिलता है जिसके कारण वे उस काल में परिचित पृथ्वी के सम्राट बने तो बाद के कालखण्ड में परकीय सभ्यताओं के आक्रमण से अपने सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा के लिये राष्ट्र को किसी एक शक्तिशाली शासन- व्यवस्था के अंतर्गत लानी की आवश्यकता अनुभव हुई। सिकन्दर के आक्रमण के पश्चात चाणक्य के निर्देशन में चन्द्रगुप्त द्वारा स्थापित मौर्य साम्राज्य इसका उदाहरण है। बाद के काल में भी ललितादित्य सहित ऐसे अनेक उदाहरण हमें मिलते हैं।

ऐसे किसी भी साम्राज्य के निर्माण में दशकों तक संघर्ष चले और लाखों लोगों को प्राणों से हाथ धोना पड़ा। फिर भी एक प्रशासनिक व्यवस्था के अतर्गत जो भारत आया वह आज के भारत से छोटा ही था। इस पृष्ठभूमि में देखें तो स्वतंत्रता के पश्चात न्यूनतम संघर्ष और हिंसा तथा न्यूनतम बलप्रयोग के बाद न्यूनतम समय में विशालतम क्षेत्रफल को एक भारतीय संघ में एकीकृत करने का जो अभूतपूर्व कार्य सरदार वल्लभ भाई पटेल के हाथों सम्पन्न हुआ वही उन्हें अपने अन्य समकालीन नेताओं की कतार में एक अलग ऊंचाई देता है।

> सरदार पटेल के हाथ में एक लिखित प्रस्ताव हस्ताक्षर के लिए दिया गया कि वे नेहरु के समर्थन में अपना दावा वापस ले रहे हैं। पटेल ने यह पत्र महात्मा गांधी की ओर बढ़ा दिया। गांधी ने इस पर जवाहर लाल नेहरू से उनकी राय पूछी। उनके चुप रहने पर गांधी जी के संकेत पर पटेल ने अपनी दावेदारी वापस ले ली।

सरदार पटेल की प्रतिमा की ऊंचाई वस्तुतः उनके व्यक्तित्व और कृतित्त्व की ऊंचाई का ही प्रतिनिधित्व करती है। किन्तु दुर्भाग्य से यह अवसर भी दलगत राजनीति से नहीं बच सका। विपक्ष को जब कुछ नहीं मिला तो तो कांग्रेस नेताओं की विरासत हथियाने का आरोप मढ़ दिया गया। कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने कहा कि एक तरफ सरदार पटेल की प्रतिमा का लोकार्पण किया जा रहा है तो दूसरी ओर उनके द्वारा बनायी गयी हर संस्था को नष्ट किया जा रहा है। राहुल ने इसे भी एक तरह का देशद्रोह बताया। शशि थरूर ने सवाल उठाया कि राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की इतनी विशाल प्रतिमा क्यों नहीं बनायी गयी। उन्होंने आरोप लगाया कि इतिहास में भाजपा का कोई ऐसा नेता नहीं है इसलिये वह स्वाधीनता सेनानियों और राष्ट्रीय नायकों को हाईजैक करने की कोशिश कर रही है। सरदार पटेल कांग्रेस के नेता थे और भाजपा को उन्हें स्वीकार करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिये।

मायावती ने जहां इसे भाजपा की संकीर्ण मानसिकता का द्योतक बताया वहीं मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि भाजपा हर साल एक अलग स्वाधीनता सेनानी को याद करती है। कभी वे पटेल को याद करते हैं, कभी स्वच्छ भारत अभियान के लिये महात्मा गाँधी को, तो कभी बी आर अम्बेडकर और नेताजी सुभाष चंद्र बोस को याद करते हैं। यह सब उनकी चुनावी चाल है, उनके मन में स्वाधीनता सेनानियों के लिये कोई सम्मान नहीं। भाकपा के महासचिव सुधाकर रेड्डी ने भी महात्मा गाँधी की इतनी विशाल प्रतिमा न लगाने पर आपत्ति जताई और खुद ही उत्तर देते हुए कहा कि वे महात्मा गाँधी की पंथनिरपेक्षता को पसंद नहॉ करते इसलिये दक्षिणपंथी विचार वाले पटेल की प्रतिमा लगवाई।

कुछ लोगों ने यह साबित करने की कोशिश की कि पटेल स्वयं आरएसएस को पसंद नहीं करते थे और उन्होंने ही गाँधी हत्या के बाद संघ पर प्रतिबंध लगाया था। तो दूसरी ओर एक खास वर्ग इस बात को मुद्दा बना रहा था कि इस पर खर्च होने वाली धनराशि से न जाने कितने स्कूल अस्पताल बनाये जा सकते थे। कुल मिला कर विपक्ष पटेल के इस महिमामंडन को दलगत और जातिवादी राजनीति से ऊपर उठ कर स्वीकार नहीं कर सका और वोटों की गणित के मोग में एक राष्ट्रीय व्यक्तित्व को विवाद में घसीट लिया। सबसे बड़ी विडंबना कांग्रेस के साथ रही जिसने मोदी के अंध-विरोध में अपने ही दल के सबसे सम्मानित नेताओं में से एक की प्रतिष्ठा को चोट पहुंचाई।

यह उल्लेखनीय है कि अपनी जुझारू छवि और स्पष्ट दृष्टि के चलते तत्कालीन कांग्रेस के केन्द्रीय नेतृत्व का भरोसा सरदार पटेल पर था। यही कारण था कि अप्रैल 1946 में जब भारत के स्वतंत्र होने और कांग्रेस के सत्ता संभालने का समय आया तो कांग्रेस की निर्णायक टोली

के पंद्रह में से बारह लोगों ने पटेल को नेतृत्व सौंपे जाने के पत्र में मतदान किया। एक ने पट्टाभि सीतारमैया और एक ने आचार्य कृपलानी का समर्थन किया। किन्तु आचार्य कृपलानी ने बापू की इच्छा का उल्लेख करते हुए नेहरू का नाम प्रस्तावित कर दिया। इस प्रस्ताव पर सबसे पहले और बाद में वर्किंग कमेटी के सभी सदस्यों ने हस्ताक्षर कर दिये।

सरदार पटेल के हाथ में एक लिखित प्रस्ताव हस्ताक्षर के लिए दिया गया कि वे नेहरु के समर्थन में अपना दावा वापस ले रहे हैं। पटेल ने यह पत्र महात्मा गांधी की ओर बढ़ा दिया। गांधी ने इस पर जवाहर लाल नेहरू से उनकी राय पूछी। उनके चुप रहने पर गांधी जी के संकेत पर पटेल ने अपनी दावेदारी वापस ले ली। इससे पहले भी वे 1936 और 39 में पार्टी को एकजुट रखने के लिये अपनी दावेदारी वापस ले चुके थे इसलिये गाँधी जी सहित सभी को यह विश्वास था कि पूरी वर्किंग कमेटी के साथ होने पर भी उन्हें संगठन की एकता के नाम पर अपनी दावेदारी वापस लेने के लिये सहमत किया जा सकेगा।।

पत्रकार दुर्गादास ने गांधीजी से जब इस संबध में सवाल किया तो उन्होंने कहा - हमने कैंप का अकेला अंग्रेज तो जवाहर ही है। वह दो नंबर का पद नहीं लेगा। इसीलिये गांधीजी ने यह उपयुक्त समझा कि अंतर्राष्ट्रीय मामले जवाहर देखेगा और आंतरिक मामले पटेल। बाद में राजेन्द्र प्रसाद ने इस पर टिप्पणी करते हुए कहा कि जवाहर के लिए महात्माजी ने अपने साथी की बलि चढ़ा दी।

पत्रकार दुर्गादास ने गांधीजी से जब इस संबध में सवाल किया तो उन्होंने कहा - हमारे कैंप का अकेला अंग्रेज तो जवाहर ही है। वह दो नंबर का पद नहीं लेगा। इसीलिये गांधीजी ने यह उपयुक्त समझा कि अंतर्राष्ट्रीय मामले जवाहर देखेगा और आंतरिक मामले पटेल। बाद में राजेन्द्र प्रसाद ने इस पर टिप्पणी करते हुए कहा कि जवाहर के लिए महात्माजी ने अपने साथी की बलि चढ़ा दी।

पटेल बापू का अत्यधिक सम्मान करते थे और वे यह भी चाहते थे कि इस नाजुक वक्त में कांग्रेस बिखरी हुई न दिखे। संगठन के भीतर अनेक लोगों ने उनकी इस सदाशयता को उनकी कमजोरी मान लिया और अपनी बातें मनवाने के लिये वे गाँधी जी का उपयोग करते थे। यहां तक कि उस समय का शीर्ष नेतृत्व भी बापू से उनकी चुगलियां करने से बाज नहीं आता था। यहां तक की ऐसी ही एक शिकायत पर बापू ने नोआखाली से पटेल को पत्र लिखा कि आप भड़काऊ भाषण दे रहे हैं, तलवार का जवाब तलवार से देने की बात करते हैं और नेहरू की घोषणा के बाद भी पदत्याग करने को तैयार नहीं है। 1947 के अंत में नेहरू और मौलाना आजाद की शिकायत पर महात्मा गाँधी ने उनसे सीधी बात की और नेहरू को सरकार चलाने देने के लिये कहा। पटेल ने इस पर बापू को इस्तीफे की पेशकश कर दी।

कश्मीर के मुद्दे पर भी दोनों के बीच नीतियों को लेकर मतभेद थे। यह पटेल के कारण नहीं बल्कि कश्मीर को लेकर नेहरू के पूर्वाग्रह और जिद के कारण थे। नेहरू कश्मीर में गोपालस्वामी आयंगर के माध्यम से हस्तक्षेप करते थे। आयंगार ने पटेल को विश्वास में लिये बिना पंजाब से 150 गाड़ियां पंजाब से जम्मू-कश्मीर भेजने का निर्देश दिया। इस पर पटेल ने आपत्ति की। नेहरू ने पटेल को लिखा कि कश्मीर मुद्दे पर पटेल की दखलंदाजी की जरूरत नहीं है। इसके विरोध में पटेल ने अपना इस्तीफा भेज दिया। नेहरू ने पत्रोत्तर दिया कि यदि प्रधानमंत्री के रूप में निर्णय लेने का हक उन्हें नहीं है तो वे स्वयं इस्तीफा देंगे।

1971 में तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व. इंदिरा गाँधी से एक विदेशी पत्रकार ने जब यह पूछा कि स्वतंत्र भारत की सबसे बड़ी उपलब्धि क्या है, तो उन्होंने उत्तर दिया - हम एक हैं। सच में, दुनियां में किसी को यह विश्वास नहीं था कि अंग्रेजों के जाने के बाद भारत एक रह सकेगा, लेकिन यह भारत की सांस्कृतिक अंतर्धारा थी जिसने सदियों से बिखरे भारत को एक बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की । वहीं सरदार पटेल की कड़ी मेहनत और राजनैतिक सूझ-बूझ ने इसे एक साझा प्रशासनिक ढाँचा दिया। आज यदि हम विश्व में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाने में सफल हुए हैं तो उसकी नींव में सरदार पटेल का यह अप्रतिम अवदान है। प्रधानमंत्री मोदी ने जब यह उल्लेख किया कि पटेल के कारण ही हम कच्छ से कोहिमा और करगिल से कन्याकुमारी तक बेरोक-टोक जा सकते हैं तो इसमें कुछ भी अतिरेक नहीं था। राजनीति की नकारात्मकता से परे, देश इस अवसर पर सरदार वल्लभ भाई पटेल को अपनी भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा है। ■

जीवन परिचय

सरदार पटेल की तुलना जर्मनी के एकीकरण के सूत्रधार बिस्मार्क से की जाती है। ना बिस्मार्क ने कभी मूल्यों से समझौता किया और न सरदार पटेल ने। अटल इरादों और लौह इच्छाशक्ति के कारण उन्हें लौह पुरूष कहा जाता है। सरदार पटेल का जन्म 31 अक्टूबर 1857 को गुजरात के नाडियाड में हुआ। पिता का नाम झावेर भाई और माता का नाम लाडबा पटेल था। माता - पिता के चौथी संतान वल्लभ भाई कुशाग्र बुद्धि के थे। उनकी रुचि भी पढ़ाई में ज्यादा रही। सरदार कितने मेधावी थे इसका अनुमान इसी तथ्यों से लगाया जा सकता है कि 1910 में वो पढ़ाई के लिए इंग्लैंड गए और कानून(लॉ) की पढ़ाई उन्होंने आधे वक्त में ही पूरा कर लिया। इसके लिए उन्हें पुरस्कार भी मिला। पढ़ाई पूरी करने के बाद वे भारत लौट आये और वकालत करने लगे। नवबंर 1917 में जब गुजरात के कई हिस्से अकाल से कराह रहे थे तब पटेल की मुलाकात गांधी जी से हुई। गांधी जी उनकी प्रशासकीय क्षमता से बेहद प्रभावित हुए। पटेल ने अस्थाई अस्पताल बनवाया। इन्फ्लूएंजा जैसी उस दौर की घातक बिमारी का इलाज इस अस्पताल में हुआ। फिर खेड़ा में अंग्रेजी शासन के खिलाफ 'कर मत दो' अभियान चलाया। बारदोली सत्याग्रह का नेतृत्व किया। इसके साथ ही वो गुजरात प्रदेश कांग्रेस के पहले अध्यक्ष बने। कहा जाता है कि 1928 में बारदोली के सत्याग्रह के समय ही वहां के किसानों ने उन्हें सरदार की उपाधि से सम्मानित किया। 1947 में भारत को आजादी तो मिली लेकिन बिखरी हुई। देश में कुल 562 रियासतें थी। ज्यादातर राजा भारत में विलय के लिए तैयार थे लेकिन कुछ ऐसे भी थे जो स्वतंत्र रहना चाहते थे। सरदार ने इन्हें बुलाया और समझाया। वो मानने के लिए तैयार नहीं हुए तो पटेल ने सैन्य शक्ति का प्रयोग किया और भारत का एकीकरण किया। बात 1909 की है पटेल की पत्नी गंभीर रूप से बिमार थीं। पटेल को एक स्वतंत्रता सेनानी के मुकदमें की सुनवाई के लिए अदालत जाना था वो पहुंचे और जिरह में लग गये। इसी दौरान अदालत का एक कर्मचारी आया। उसने एक टेलिग्राम पटेल के हाथ में रख दिया। इस पर लिखा था कि उनकी पत्नी का निधन हो गया है। पटेल ने उसे पढ़ा। फिर संभालकर अपने जेब में रख लिया और जिरह पूरी की। यह स्वतंत्रता सेनानी बरी हुआ। बाद में न्यायाधीश को जब इस घटना के बारे में जानकारी मिली तो उन्होंने पटेल से पूछा, आपने ऐसा क्यों क्या? सरदार पटेल ने जवाब दिया - ये मेरा कर्तव्य था, मेरे मुवक्किल को झूठे मामले में फंसाया गया है। मैं अन्याय के पक्ष में कैसे जा सकता हूं।

ख़बर

देश के सतत् विकास में कृषि की भूमिका पर एग्रीविजन द्वारा कार्यशाला का आयोजन

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के प्रकल्प एग्रीविजन के द्वारा देश के सतत् विकास में कृषि की भूमिका पर दिल्ली स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा में कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला को संबोधित करते हुए अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुनील आंबेकर ने कहा कि खेती, गांव एवं किसान भारत का मेरूदंड है, इसे नजरअंदाज कर देश के विकास की कल्पना नहीं की सकती। देश में खाद्यान उत्पादन में पहले की अपेक्षा वृद्धि हुई है, हम उत्पादों का आयात - निर्यात दोनों कर रहे हैं, इस प्रगति में भारत के किसानों के साथ - साथ कृषि विश्वविद्यालयों की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने कहा कि गांव के विकास से पर्यावरण भी सुरक्षित रहेगा और देश प्रगति करेगा। नई पीढ़ी के लिए रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे। वहीं एग्रीविजन प्रमुख सुरज भारद्वाज ने कहा कि एग्रीविजन देश का एक सकारात्मक, रचनात्मक मंच है जो कृषि के क्षेत्र में गंभीरता से कार्य कर रहा है। कृषि की पढ़ाई कर रहे छात्रों की समस्याओं के समाधान के लिए एग्रीविजन प्रयासरत है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के संयुक्त निदेशक डॉ. जे. पी. शर्मा ने कृषि के क्षेत्र में रोजगार की संभावनाओं पर विशेष जोर देते हुए कहा कि कृषि के माध्यम से रोजगार के अवसर को बढ़ाया जा सकता है। इस अवसर पर एग्रीविजन के राष्ट्रीय संयोजक गजेन्द्र तोमर, अभाविप के राष्ट्रीय सह-संगठन मंत्री श्रीनिवास, क्षेत्रीय संगठन मंत्री विक्रांत खंडेलवाल समेत अनेक शोधार्थी और कृषि वैज्ञानिक उपस्थित थे। ■

स्टेच्यू ऑफ यूनिटी है भारतीय इतिहास एवं मूल्यों का प्रतीक: अभाविप

विश्व की सबसे बड़ी प्रतिमा, प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी एवं आजाद भारत के प्रथम उप-प्रधानमंत्री, गृहमंत्री तथा लौहपुरूष की ख्याति प्राप्त सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के उपलक्ष्य में गुजरात स्थित स्टेच्यू ऑफ यूनिटी का प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा अनावरण किया गया। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् का मानना है कि सरदार वल्लभ भाई पटेल के बलिदानों तथा समाज में स्थापित उनके मूल्यों का प्रतीक है।

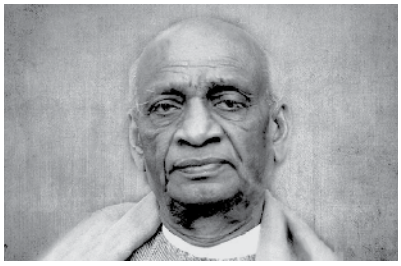

गुजरात के नाडियाद में जन्मे लौहपुरूष सरदार वल्लभ भाई पटेल ने खेड़ा संघर्ष, बारडोली सत्याग्रह आदि आंदोलनों का नेतृत्व किया एवं अंग्रेजों के खिलाफ एक लंबी लड़ाई लड़ी। इतना ही नहीं आजादी के पश्चात भी अपने सिद्धांतों का पालन करते हुए सरदार पटेल ने अपने गृहमंत्री के कार्यकाल में देसी रियासतों का एकीकरण जैसे महत्वपूर्ण निर्णय लेने के साथ अपने सिद्धांतों पर चलते हुए अपना संपूर्ण जीवन देश सेवा में लगा दिया। अभाविप ऐसे महापुरूष को विनम्र श्रद्धांजलि ज्ञापित करती है। अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री आशीष चौहान ने कहा कि माननीय सरदार वल्लभ भाई पटेल जी का महान एवं सिद्धांतवादी चरित्र को छात्रों को पढ़ाना चाहिए। देश के लिए उनके बलिदान, संघर्ष एवं योगदान से समाज को परिचित करवाना चाहिए। ■

(उपरोक्त तथ्य अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री आशीष चौहान द्वारा जारी प्रेस वक्तव्य से लिया गया है।)

नहीं रहे केन्द्रीय मंत्री व अभाविप के पूर्व राष्ट्रीय मंत्री अनंत कुमार

भारत सरकार के केन्द्रीय रसायन और उर्वरक एवं संसदीय कार्य मंत्री अनंत कुमार के आकस्मिक निधन से अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के कार्यकर्ताओं में शोक व्याप्त है। अभाविप के द्वारा जारी वक्तव्य में राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुनील आंबेकर, राष्ट्रीय सह- संगठन मंत्री के. एन. रघुनंदन राष्ट्रीय अध्यक्ष एस. सुबैय्या और राष्ट्रीय महामंत्री आशीष चौहान ने गहरा शोक व्यक्त की है।

राष्ट्रीय सह - संगठन मंत्री के. एन. रघुनंदन ने श्रद्धांजिल अर्पित करते हुए कहा कि माननीय अंनत कुमार ने एक कुशल, दूरदर्शी एवं आदर्श राजनीतिज्ञ के रूप में कार्य किया। कर्नाटक में अस्सी के दशक में छात्र आंदोलन को गति एवं दिशा देने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। उन्होंने अभाविप हुबली नगर से लेकर कर्नाटक प्रांत मंत्री, कर्नाटक प्रांत संगठन मंत्री के रूप में लंबे समय तक पूर्णकालिक कार्यकर्ता के रूप में कार्य किया। इसके साथ ही अभाविप के राष्ट्रीय मंत्री जैसे महत्वपूर्ण दायित्व का निर्वहन करते हुए 'सेव कैंपस ' जैसे राष्ट्रीय स्तर के बड़े आंदोलनों का नेतृत्व किया। तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी सरकार द्वारा लागू की गई आपातकाल के समय में उन्हें भी हजारों छात्रों के साथ जेल में रखा गया। वह अटल जी के नेतृत्व में बनी राजग सरकार में कम उम्र में केन्द्रीय मंत्री बने तथा अपनी दूरगामी सोच के प्रभाव से उन्होंने अपने क्षेत्र में विकास के नए आयामों को स्थापित किया। वह हम सभी के लिए एक प्रेरणास्रोत रहे। ऐसे महान व्यक्ति का जाना देश के लिए बहुत बड़ी व अपूरणीय क्षति है। ■

Special story on Rani Lakshmibai Jayanti

Women empowerment & ABVP

Monika Chaudhary

India is a nation where worshipping women is inherited in its culture. Still as time moved on a situation came in our society where various social evils came into existence and woman cudn't excel in life and was forced to stay in houses because of security concerns.

But even in that scenario we had the example of Rani Lakshmi Bai who fought bravely and heroically against the British Raj and sowed the seeds of independence and heroism. She made supreme sacrifices for our country and set a glorious example of patriotism and national pride. She has been a source of much inspiration for national honour and sacrifice for it all these years. Her martyrdom has been unique and exemplary and a subject of much admiration and emulation. Still the situation regarding unsafety of women remain constant in our society.

Presently, we live in an era where women have excelled in almost all fields they have ventured and proved to be some of the best leaders in several domains from the corporate to the social. Having said that, it is also a stark reality there is a considerable majority among women who are bogged down by many social issues. Moreover in recent past we have been witnessing some of the worst atrocities against women, immediately after which the society has risen up demanding justice for the victims. Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad, working among students has been a rallying point for not just mere candle marches and protests but for a larger

purpose of creating awareness among women about their rights and empower & mould girl students for a larger role in the society.

Mission SAHASI - A project of Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad in one such step aimed not just to instil confidence among women but also to bring the much needed change in the "chalta hai" status quoist attitude prevailing in the society towards women and their issues. Mission SAHASI is a self-defence training programme for girls imparted by the finest of martial arts trainers & security experts.

Mission SAHASI is customized by expert trainers keeping in mind the threats faced by girls in their daily routine, be it on a crowded streets or in empty train and to defend herself in any circumstance and in company of known or unknown people. "Making of the fearless" the tagline for this project is salient feature of training imparted to girls. ABVP strongly believes that such programmes would help build confidence in many young women who have the skill & will to achieve wonders.

Mission SAHASI commenced in Mumbai in March 2018 where 10,000 girls in Mumbai were given crucial self protection and survival techniques by Grandmaster Shifuji Shaurya Bhardwaj. After training in five campuses in Mumbai, 5000 girls demonstrated the learnt techniques in MMRDA Grounds, BKC in presence of Hon'ble Chief Minister of Maharashtra Shri Devendra Fadnavis, actress Raveena Tandon and other dignitaries.

After the success of Mission SAHASI training in Mumbai where it was clearly observed that girls participated in this Campaign keeping all boundaries of cast, religion, creed and colour aside, the initiative was replicated across India with the aim of providing self defence training to approximately 10 lakh girls. In each state, in almost every district of India, Mission SAHASI training camps were conducted by the karyakartas of ABVP. In all the camps across India, more than 8 lakh girls were trained in critical self-defence techniques. In the grand demonstrations organized post training camps, more than 5 lakh girls across India showed that fearlessness is the choice they made, and that they are ready to protect themselves in every situation. Whether it was Arunachal Pradesh where hundreds of girls learnt karate techniques or if you see Manipur, the place where women are already empowered in one way or the other there also the need of Mission Sahasi was observed and it got a great response or Hyderabad in south where approximately 10000 girls gave demonstration of their self defence techniques on same place at the same time or if we talk about Middle Bharat then In Ujjain approximately 5000 girls performed about the self protection techniques while standing systematically in the shape of Indian map. In

North, thousands of girls participated in each training camp and mega demonstrations took place at various places. This campaign was visible on ground from J&K to kanyakumari. Mega demonstrations took place in approximately 450 places of 30 states across the nation in which approximately 5 lakh girls performed and more than 8 lakh girls took training under this National campaign. Various eminent personalities belonging to different fields also turned up for this event and showed their presence and support.

With Mission SAHASI, ABVP has once again showed that it does not only preach women empowerment, but practices it to ! ■

(Author is national media convenor of ABVP)

पांच लाख छात्राओं ने किया शौर्य का प्रदर्शन

मिशन साहसी के तहत अभाविप ने किया पांच लाख से अधिक छात्राओं को प्रशिक्षित

देश भर में आये दिन महिलाओं के साथ दुराचार एवं छेड़-छाड़ की घटनाएं सामने आती है। एक तरफ हम मंगल का सफर कर आयें हैं और वहीं दूसरी तरफ अपने ही देश में अगर बेटियां खुद को असुरक्षित महसूस करे तो बेहद शर्म की बात है। महिला सुरक्षा, सम्मान, शिक्षा और स्वालंबन को लेकर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् प्रारंभ से ही सजग रहा है। यही कारण है कि अभाविप के कई शीर्ष दायित्वों में छात्रा कार्यकर्ता कार्य कर रही हैं। विद्यार्थी परिषद के द्वारा गत 30 अक्टूबर को देश भर में अनोखा प्रयोग किया है, जिसका नाम है 'मिशन साहसी'। मिशन साहसी के तहत देश भर में पांच लाख से अधिक छात्राओं ने एक साथ शौर्य का प्रदर्शन का किया। यह प्रदर्शन किसी के खिलाफ नहीं बल्कि अपने स्वाभिमान और अस्मिता की रक्षा के लिए था। मिशन साहसी का मूल उद्देश्य छात्राओं को निर्भय एवं निडर बनाना है ताकि वह अपनी रक्षा स्वयं कर सके। अभाविप के इस बैनर के तले विगत 30 अक्टूबर से दो नवंबर तक सैंकड़ों शिविरों में प्रशिक्षित छात्राओं ने अपनी क्षमताओं का प्रदर्शन किया। देश भर के 30 प्रांतों में 450 से अधिक स्थानों पर आयोजित हुए विशाल प्रदर्शन में लगभग पांच लाख से अधिक छात्राओं ने सीखी हुई तकनीकियों का एक साथ प्रदर्शन किया।

करगिल से लेकर कन्याकुमारी तक एवं कच्छ से लेकर कोहिमा तक छात्राओं की सुरक्षा के लिए अभाविप के द्वारा चलाया गया यह राष्ट्रव्यापी अभियान बेहत अनुशासित रूप से संचालित किया गया। आध्रप्रदेश के 19 जिलों में लगभग 33 हजार छात्रों ने प्रदर्शन किया। वहीं तेलगांना में लगभग 20 हजार छात्राओं ने भाग लिया जिसमें दस हजार से अधिक छात्राओं ने प्रदर्शन केवल हैदराबाद में किया जिसमें मुख्य अतिथि के तौर पर मशहूर अभिनेत्री माधवी लता एवं विशिष्ट अतिथि के तौर पर अभाविप की राष्ट्रीय छात्रा प्रमुख ममता यादव उपस्थित थीं। अगर हम कर्नाटक की बात करें तो कर्नाटक के 27 जिलों में आत्मरक्षा शिविर का आयोजन किया गया था, जिसमें लगभग 42 हजार छात्राओं ने तकनीक का प्रदर्शन किया। दिल्ली में अभाविप, डूसू एवं मिशन प्रहार के संयुक्त तत्वाधान में लगभग पांच हजार छात्राओं ने अद्भुत तकनीक का प्रदर्शन किया, इन छात्राओं को शिफूजी भारद्वाज की निगरानी में प्रशिक्षित किया गया था। कोंकण प्रांत में पांच हजार छात्राओं ने एक साथ प्रदर्शन किया। महाराष्ट्र प्रांत

के कुल 51 स्थानों में लगभग छः हजार छात्राओं ने अपने शौर्य का प्रदर्शन किया। तमिलनाडु में भी कई स्थानों पर प्रदर्शन का आयोजन किया गया जिसमें सैकड़ों छात्राओं ने भाग लिया। इसी प्रकार मध्य भारत के उज्जैन में आयोजित कार्यक्रम में 4100 छात्राओं ने भारत के नक्शे के अनुसार सीमा बनाते हुए अपने सीखे हुए गुणों का प्रदर्शन किया साथ ही मध्य भारत में कुल 42 स्थानों पर मिशन साहसी के कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें 26 हजार छात्राओं की सहभागिता रहीं। महाकौशल के 35 स्थानों पर साढ़े तीस हजार छात्राओं ने अपना कौशल दिखलाया। वहीं छत्तीसगढ़ के 19 जिलों में सात हजार से अधिक छात्राओं ने प्रदर्शन किये। ओड़िसा में चार हजार छात्राओं ने अपने तकनीक का प्रदर्शन किया। पश्चिम बंगाल में भी छात्राओं ने अद्भुत प्रदर्शन किये, जिसमें 13 सौ से अधिक छात्रा शामिल थीं। झारखंड में छात्राओं ने मिशन साहसी के आत्मरक्षा अभियान में बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। झारखंड के कुल 14 स्थानों पर आयोजित शिविर में 22 हजार छात्राओं ने एक से बढ़कर एक प्रदर्शन किये। बिहार में कुल 92 स्थानों पर छात्राओं विशाल प्रदर्शन का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 25 हजार छात्राओं ने भाग लिया। काशी प्रांत में कुल 30 हजार छात्राओं को मिशन साहसी के तहत प्रशिक्षित किया गया था जिसमें से 25 हजार छात्राओं ने प्रदर्शन में भाग लिया। गोरक्ष प्रांत में 15 स्थानों पर प्रदर्शन का आयोजन किया गया था जिसमें 37 हजार से अधिक छात्राओं ने भाग लिया। वहीं अवध प्रांत में लगभग 23 हजार छात्राओं ने आत्मरक्षा की अनोखी तकनीक से लोगों को अवगत करवाया, जिसमें से केवल लखनऊ में सात हजार से अधिक छात्राओं ने भाग लिया। कृष्ण की भूमि वाली ब्रज प्रांत में करीब 27 हजार छात्राओं ने नई - नई तकनीक का प्रयोग किया। कानपुर प्रांत में लगभग 18 हजार छात्राओं ने 14 स्थानों पर प्रदर्शन किये। देवभूमि उत्तरांचल के पहाड़ी क्षेत्रों में भी छात्राओं का जबरदस्त उत्साह था, यहां भी लगभग 10 हजार छात्राओं ने प्रदर्शन किये। मेरठ प्रांत के 11 स्थानों पर नारी शक्ति की अनोखी मिसाल पेश की गई, एक साथ 16 हजार से अधिक छात्राओं ने अपने शौर्य का प्रदर्शन किया। हरियाणा में छात्राओं ने मिशन साहसी अभियान में काफी रूचि दिखाई। पंजाब में 4 हजार छात्राओं ने विभिन्न स्थानों पर आत्मरक्षा के तकनीक का प्रदर्शन किये। जम्मू - कश्मीर में लगभग 2350 छात्राओं की सहभागिता थीं। हिमाचल प्रदेश में कुल 122 स्थानों पर मिशन साहसी के आत्मरक्षा शिविर का आयोजन किया गया। सर्दी के मौसम में भी शिमला का रिज मैदान पसीने से तरबदर था, छात्राओं के अद्भुत प्रदर्शन को देखकर केन्द्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने कहा कि अब बेटियों को छेड़ने वालों की खैर नहीं। जयपुर प्रांत में लगभग 23 हजार छात्राओं ने भाग लिया, जयपुर में बेटियों का यह शौर्य देखने लायक था। वहीं चितौड़ व जोधपुर प्रांत में क्रमशः 9500 एवं 8900 छात्राओं ने प्रदर्शन किये। पूर्वोत्तर में वहां छात्राओं का उत्साह चरम पर था,वहां के छात्राओं ने एक से बढ़कर एक आत्मरक्षा का कौशल दिखलाया। पूर्वोत्तर के राज्यों क्रमशः असम, मणिपुर, त्रिपुरा, नागालैंड,, मेघालय, अरूणाचल प्रदेश में 4000, 500, 1200,100 एवं 1100 (लगभग) छात्राओं ने भाग लिया।

देश भर में चल रहे मिशन साहसी के अभियान में छात्राओं से मिल रहे समर्थन एवं उत्साह को देखते हुए अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री आशीष चौहान ने कहा कि मिशन साहसी छात्राओं के अंदर साहस से उनका साक्षात्कार करवाने का एक अभियान है ताकि वह अपनी शक्ति को पहचानकर आत्मनिर्भर एवं स्वावलंबी बन सकें। वहीं अभाविप के राष्ट्रीय छात्रा कार्य प्रमुख ममता यादव ने कहा कि इस अभियान में अभाविप ने पांच लाख से अधिक छात्राओं को भयमुक्त बनाकर किसी भी परिस्थिति से लड़ने योग्य बनाया है। यह अभियान महिला को सशक्त बनाकर समाज में प्रत्येक महिला के लिए सम्मान को सुनिश्चित करने की एक पहल है। राष्ट्रीय मंत्री निधि त्रिपाठी के मुताबिक मिशन साहसी निर्भरता से निडरता की ओर ले जाने का अभियान है। अब छात्राएं अपनी रक्षा खुद कर सकेंगी। अभाविप ने सदैव लैंगिक समानता की बात की है। अभाविप, डूसू एवं मिशन प्रहार के संयुक्त तत्वाधान में दिल्ली विश्वविद्यालय में आयोजित विशाल नारी शक्ति प्रदर्शन में पहुंचे अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. एस. सुबैय्या ने कहा कि समाज में महिलाओं को सशक्त बनाने हेतु मिशन साहसी एक सकारात्मक पहल है जो महिलाओं के अंदर आत्मविश्वास का संचार करने में सफल दिखाई दे रही है। मुख्य प्रशिक्षक शिफूजी भारद्वाज ने कहा कि वर्तमान समय में बेटियों को आत्मरक्षा की ट्रेनिंग बेहद जरूरी है। हमने गहन शोध के पश्चात मिशन प्रहार के माध्यम से लड़कियों को प्रशिक्षण देने का काम शुरू किया है। वहीं सुप्रसिद्ध स्क्रिप्ट लेखक अद्वैता काला ने कहा कि अभाविप के द्वारा आयोजित मिशन साहसी का कार्यक्रम वर्तमान समय में बेहद प्रासंगिक है। ■

हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय में अभाविप की ऐतिहासिक जीत

हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय (एसचीयू) छात्रसंघ चुनाव में विरोधियों के अनुमानों को ध्वस्त कर अभाविप ने ऐतिहासिक विजय हासिल की है। ऐतिहासिक, इसलिए क्योंकि एचसीयू में पिछले कई वर्षों से वामपंथी एवं उससे संबंधित संगठनों का आधिपत्य था, रोहित वेमुला आत्महत्या प्रकरण के बाद यह विश्वविद्यालय काफी चर्चा में आया था। आठ वर्ष बाद पुनः एचएसचीयू में अभाविप की वापसी कई मायनों में महत्वपूर्ण है। अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री आशीष चौहान ने सभी नवनिर्वाचित छात्र नेताओं को बधाई दी और उन्होंने कहा कि यह जीत विद्यार्थी परिषद् के प्रति छात्रों के विश्वास को पुष्टि करती है। यह शानदार जीत अभाविप के रचानात्मक कार्य के प्रति छात्रों का समर्थन दर्शाती है। अभाविप के नेतृत्व में विश्वास दिखाने और एचसीयूएसयू में विजयी बनाने के लिए हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय के छात्रों के प्रति अभाविप आभार व्यक्त करती है।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के नेतृत्व में ओबीसी फेडरेशन और सेवालाल विद्यार्थी दल के समर्थन के साथ एचसीयू छात्र संघ चुनाव में अभाविप ने सभी पदों पर जीत हासिल की है। अभाविप से अध्यक्ष पद की प्रत्याशी कु. आरती नागपाल ने 1663 मतों से, उपाध्यक्ष पद के प्रत्याशी अमित कुमार ने 1505 मतों से, महासचिव पद पर धीरज संगोजी ने 1575 मतों से, सह - सचिव पद पर प्रवीण कुमार ने 1417 मतों से, सांस्कृतिक सचिव पद पर अरविंद कुमार ने 1475 मतों से तथा खेल सचिव पर निखिल राज ने 1467 मतों से जीत दर्ज की है।

क्या कहतीं हैं एचसीयू की नवनिर्वाचित अध्यक्ष आरती नागपाल ?

एचसीयू की नवनिर्वाचित अध्यक्ष आरती नागपाल विश्वविद्यालय की शोध छात्रा हैं। 2015 में उन्होंने पीएचडी में दाखिला लिया। वह सेक्यूअल हेल्थ ऑफ विमन पर शोध कर रही हैं। आरती बताती हैं कि शुरू से ही उनका रूझान राष्ट्रवादी विचारों के प्रति रहा है, जिस कारण वे विद्यार्थी परिषद् से जुड़ीं। उन्होंने बताया कि वे विद्यार्थी परिषद् में कई दायित्व भी निभा चुकी हैं। इससे पहले वे 2017 में सांस्कृतिक सचिव पर चुनाव लड़ी थीं परंतु मामूली वोटों की अंतर से उन्हें हार का मुंह देखना पड़ा था लेकिन अभाविप ने उन पर पुनः विश्वास जताकर वर्ष 2018-19 छात्र संघ चुनाव में अध्यक्ष पद पर चुनाव लड़वाया और उन्होंने काफी मतों के अंतर से जीत भी हासिल की। आठ साल बाद पूरे पैनल में अभाविप की जीत के बारे में पूछे जाने पर आरती नागपाल बताती है कि कुछ संगठनों के द्वारा अभाविप को बदनाम करने की असफल कोशिश की गई, यह सत्य है कि पिछले आठ सालों में परिषद् के पास कोई बड़ा पद नहीं था लेकिन यह कहना बिल्कुल गलत होगा कि परिषद् पिछले आठ सालों से हारती आई है। मैं आपको बता दूं कि पहले भी सांस्कृतिक सचिव और महासचिव के पद अभाविप के पास रहे थे। अभाविप में छात्राओं को समान नेतृत्व का अवसर दिया जाता है। अध्यक्ष बनने के बाद प्राथमिकता के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने जवाब दिया कि हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय में लड़कियों की सुरक्षा एक गंभीर विषय है। यहां पर छात्राओं की सुरक्षा को लेकर कोई ठोस उपाय नहीं किये गये हैं, आये दिन छेड़छाड़ की घटनाएं सामने आती हैं लेकिन जांच समिति का रवैया संतोषप्रद नहीं है, शिकायत का निदान करने में कभी - कभी सालों लग जाते हैं। इसलिए छात्राओं की सुरक्षा सुनिश्चित करना मेरी पहली प्राथमिकता है साथ ही मैं मेस में भोजन और फेलोशिप मिलने में देरी के विषय पर भी काम करूंगी। संगठन का पूरा सहयोग मिल रहा है उम्मीद है कि मैं विश्वविद्यालय के अपेक्षाओं पर खरी उतरूंगी। ■

नोएडा, मेरठ प्रांत

दिल्ली विश्वविद्यालय दक्षिणी परिसर, दिल्ली

शिमला, हिमाचल प्रदेश

सोलापुर, महाराष्ट्र

उज्जैन

भोपाल, मध्यभारत

कर्नाटक

लखनऊ, अवध प्रांत

हैदराबाद, तेलंगाना

काशी

ओड़िशा

सिद्धार्थनगर, गोरक्ष प्रांत

उत्तरकाशी, उत्तरांचल

गुजरात

कोलकाता, पं. बंगाल

कोटा, चित्तौड़ प्रांत

भागलपुर, बिहार

जयपुर

झांसी, कानपुर प्रांत

रांची, झारखंड

मणिपुर

मेघालय

अरूणाचल प्रदेश

असम

बाबासाहेब डा॰ भीमराव अम्बेडकर विराट एवं बहु-आयामी व्यक्तित्व

।प्रा. राजकुमार फुलवारिया।

बाबा साहेब का जीवन एक योद्धा का जीवन था, जिसने अभाव, उपेक्षा, घृणा, अपृश्यता, निन्दा तथा घोर विरोध के वातावरण में भी जिनकी वाणी, लेखनी और कदम करोड़ों वंचितों, असहाय लोगो के लिए निरंतर अडिग-अविचलित गतिमान रहे तथा लक्ष्य की और बढ़ते रहे। बाबा साहेब के संघर्ष और बहुआयामी व्यक्तित्व को समझने से पूर्व बाबा साहेब के जीवन चरित का जानना आवश्यक है।

बाबा साहेब का जन्म उस समय अपृश्य कहे जाने वाले 'महार' परिवार के श्री रामजी सकपाल, जो अंग्रेजी सेना में सिपाही के रूप में भर्ती हुये और अपनी मेहनत और लगन के बल पर सुबेदार मेजर पद पर पहुँचे थे।

श्री रामजी सकपाल महाराष्ट्र के रत्नगिरि जिले के अम्बाबाडे नामक गाँव के रहने वाले थे। जब श्री रामजी सकपाल मध्य प्रदेश के इन्दौर जिले की सैनिक छावनी महू में तैनात थे वहीं 14 अप्रैल, 1891 को भीमराव का जन्म हुआ। 1894 में सूबेदार रामजी सकपाल रिटायर होकर बम्बई में रहने लगे, बालक भीम अभी पाँच वर्ष के थे कि माता भीमाबाई का देहान्त हो गया, पिता श्री रामजी सकपाल भी अपने बालक को पढ़ाना चाहते थे, अस्पृश्य जाति के कारण स्कूल में बड़े कष्ट से प्रवेश मिला, बालक भीम ने बाल्यकाल से ही अर्स्पश्यता के कटु अनुभव को सहा, कक्षा में सभी छात्रों से दूर बैठना, पानी पीने के लिए घड़े को न छूना और नाई के द्वारा बाल न काटना, कक्षा में अध्यापक द्वारा उत्तर पुस्तिका को हाथ न लगाना।

एक दिन वे अपने पिता से मिलने गोरे गांव गए थे और रेलवे स्टेशन पर जब कोई लेने नहीं आया तो बड़ी मुश्किल से एक बैलगाड़ी गांव जाने के लिए तैयार हुई किन्तु गाड़ीवान को जैसे ही पता चला कि यह बच्चे आनन्दराव, भीम और उनका भान्जा, अछूत महार है तो उसी समय इनको नीचे धकेल दिया गया। इन सैकड़ों घटनाओं ने भीम के मन को झकझोर दिया। कई बार वह अपने पिता और बुआ मीरा बाई से प्रश्न करता था किन्तु कोई सही उत्तर ना पाकर उदास भी हो जाता, किन्तु जहाँ एक ओर समाज व्यवस्था ने चोट पहुँचाई वही दूसरी और हाईस्कूल के शिक्षक ने अपने मेधावी छात्र भीम को अपना उपनाम अम्बेडकर दिया क्योंकि उनके गांव का नाम अम्बावाडेकर था। शिक्षक श्री पेंडसे से उनको स्नेह, प्यार और दुलार मिला। जब पहली बार एक अछुत महार जाति का बालक मैट्रिक पास करता है। उसके अभिनन्दन कार्यक्रम में श्री कृष्ण जी अर्जुन केलुस्कर ने अध्यक्षता की और आगे की पढ़ाई के लिए छात्रवृति मिले इसका भी प्रयास किया।

भीमराव ने एल्फिस्टन कॉलेज में प्रवेश लिया और 1912 में स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण की। घर की आर्थिक स्थिति ठीक ना होने के कारण बड़ोदा रियासत में लैफ्टीनैंट की नौकरी की। लेकिन 15 दिन में ही पिताजी के अस्वस्थ होने की खबर पर बम्बई लौट आना पड़ा। 3 फरवरी 1913 को उनके पिता का देहान्त हो गया। अब भीमराव पर परिवार का बोझ और आगे की पढ़ाई जारी रखने की चुनौती थी और बड़ौदा की रियासत के एक समझौते के तहत जुलाई 1913 को अमेरिका के कोलम्बिया विश्वविद्यालय में दाखिला लिया। भीम उस समय अस्पृश्य जाति का प्रथम छात्र था जो विदेश पढ़ने गया। वहाँ 18-18 घंटे पढ़कर एम॰ए॰ और पी॰एच॰डी॰ की पढ़ाई पूर्ण की और 1916 में अमेरिका से लन्दन एम॰एस॰सी॰ और बी॰एस॰सी॰ की पढ़ाई हेतु गए। किन्तु उनको बीच में ही भारत लौट आना पड़ा और समझौते के तहत बड़ौदा रियासत में नौकरी की, किन्तु वहाँ भी अस्पृश्यता के डंक ने उनको घायल किया। बड़ौदा रियासत के सैन्य सचिव होने पर भी उनको कोई घर नहीं मिला। पारसी धर्मशाला में पारसी बनकर ठहरे किन्तु पता चलते ही पारसी धर्मशाला से सामान सहित बाहर कर दिया गया और यहीं डा॰ अम्बेडकर के जीवन में एक नया मोड़ आया कि मेरे जैसे शिक्षित व्यक्ति को यदि सम्मान नहीं मिल सकता तो मेरे समाज के करोड़ों बन्धु तो पशु तुल्य जीवन जीने के लिए मजबूर रहेंगे। अब मेरे समाज को इस अस्पृश्यता के कलंक से मुक्ति दिलाना ही मेरे जीवन का लक्ष्य है। मुम्बई आकर सिडेनहम कालेज में 1918 में राजनैतिक अर्थशास्त्र के पद पर कार्य आरम्भ किया। किन्तु नौकरी करते हुये कुछ पैसे बचाये और कोल्हापुर के महाराजा छत्रपति शाहु जी महाराज की सहायता से पुनः लन्दन अपनी अधूरी पढ़ाई को पूरा करने

के लिए गए। लन्दन से एम॰ एस॰सी॰ और लॉ की डिग्री लेकर भारत लौटे। 1923 में भारत लौटने के साथ ही बैरिस्टर बन कर अब उन्होंने समाज की लड़ाई लड़ने का संघर्ष आरम्भ किया और जीवन पर्यन्त 6 दिसम्बर, 1956 तक इस देश के वंचितो, दलितो और महिलाओं के उत्थान और सम्मान की लड़ाई लड़ाई लड़ते रहे।

बाबा साहेब का जीवन विराट और बहुआयामी रहा, किन्तु इस देश का दुर्भाग्य रहा कि गत् 50 वर्षों में बाबा साहेब के व्यक्तित्व के एक-दो पक्षों को ही भारत की जनता के समक्ष रखा गया। आज बाबा साहेब के विराट रूप, बहुआयामी व्यक्तित्व और सर्वस्पर्शी कार्य का वर्णन करने का लघु प्रयास करेंगे।

सामाजिक आन्दोलनकारी

सन् 1923 को लंदन से बेरिस्टर बनकर लौटने पर अपना जीवन उपेक्षित, वंचितों के उद्धार में जुट गये, 20 जुलाई, 1924 को बहिष्कृत हितकारिणी सभा का स्थापना कर सामाजिक जीवन आरंभ किया, इस सभा के माध्यम से देश के वंचितों के लिए संघर्ष आरम्भ किया। सन् 1924 में समता सैनिक दल का गठन किया। सामाजिक क्रांतियों के इतिहास में बाबा साहेब का महाड़ सत्याग्रह एक मील के पत्थर की तरह हैं, महाड़ के चवदार तलाब में पशु तक पानी पी सकते थे किन्तु अस्पृश्य लोगों को पानी पीने का अधिकार नहीं था, इसके विरोध में 20 मार्च, 1927 को अपने ही सहयोगियों के साथ चवदार तलाब, महाड़ ने पानी पीकर एक नई क्रांति को जन्म दिया। सन् 1929 में उन्होंने घोषणा कि यज्ञोपवीत पर केवल ब्राह्मणों का ही अधिकार नहीं अपितु सभी हिन्दुओं का समान अधिकार है, इसके साथ ही हज़ारों अस्पृश्य बन्धुओं को यज्ञोपवीत करवाया। सन् 1930 में नासिक के कालाराम मन्दिर में प्रवेश हेतु सत्याग्रह किया और अह्वान किया जितना अधिकार मन्दिर में अस्पृश्यों का है उतना ही अधिकार अस्पृश्य कहे जाने वाले बन्धुओं का है। अतः कालाराम मन्दिर का आंदोलन सामाजिक क्रांति का आधार बना।

मजदूर नेता

सन् 1920 के दशक में मिल मजदूरों के बीच कम्यूनिस्ट संगठनों का प्रभाव था, बाबा साहेब कम्यूनिस्टों की हड़तालों से दूर रहने का आग्रह करते थे। और हम मजदूरों की ऐसी स्थिति नहीं है कि हम हड़ताल पर जाकर अपने और अपने परिवार को भुखमरी के कग़ार पर ले जाए। कम्यूनिस्टों को राजनीति से प्रेरित और मजदूरों का घोर शत्रु बताया। सन् 1936 में स्वतंत्र मजदूर दल की स्थापना की और घोषणा पत्र जारी किया। जिसमें श्रमिकों के लिए कानून बनाया जाए, नौकरियाँ देना, कारखानों में बढ़ती देना, काम के घण्टे, वेतन, छुट्टी, सस्ते आवास आरोग्य आदि सम्बंधित कानून बनाये जायें। सन् 1938 में बम्बई विधान सभा में ओद्योगिक कलह अधिनियम-1938 पारित हुआ जो मजदूर विरोधी था। बाबा साहेब ने इस विधेयक के खिलाफ 60 मजदूर संगठनों को एकत्रित व संगठित कर आंदोलन का नेतृत्व किया।

लेखक, पत्रकार

बाबा साहेब के बहुआयामी व्यक्तित्व में उनकी लेखनी का महत्वपूर्ण योगदान रहा। सन् 31 जनवरी, 1920 में पाक्षिक मूकनायक पत्रिका आरम्भ की। देश के लाखों - करोड़ों दलितों व वंचितों की आवाज़ मूकनायक बना। सन् 1924 में सामाजिक आंदोलन हेतु बहिष्कृत हितकारिणी सभा का गठन किया, इन संघर्षों को लोगों तक पहुँचाने के लिए सन् 3 अप्रैल, 1927 में बहिष्कृत भारत मराठी पाक्षिक आरंभ किया, सन् 1930 में जनता के सहयोग से भूषण प्रिटिंग प्रेस, बम्बई में स्थापना की और जनता नामक पत्र निकाला, यह पत्रिका 26 वर्षो तक संघर्ष की साक्षी बनी। बाद में इसका नाम प्रबुद्ध भारत रखा गया। बाबा साहेब उस काल की प्रत्येक राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय घटना पर बेबाकी से अपना विचार प्रकट करते थे। उनके द्वारा लिखी पुस्तकें व लेख आज भी वंचित समाज का मार्गदर्शन करती है। उनकी कलम ने भारत को श्रेष्ठ संविधान दिया।

अर्थशास्त्री

निःसंदेह बाबा साहेब सामाजिक व राजनैतिक क्रांति के अगुवा थे किन्तु मूलत् वह महान अर्थशास्त्री थे। उनकी एम॰ए॰, एम॰फिल॰, पी॰एच॰डी॰, एम॰एस॰सी॰, डी॰एस॰सी॰ सभी विषयों के शोध प्रबंध अर्थनीति, अर्थशास्त्र और अर्थव्यस्था से संबंधित थे। इनके शोध प्रबंध

- Administration and Finance of East India Company.
- Small Holdings in India and their remedies.
- Evolution of Provincial Finance in British india.
- Problem of Rupee.

दामोदर वैली बिल 1948 में पारित, इस प्रोजेक्ट के शिल्पकार थे। कृषि क्षेत्र में अमूल्य सुझाव, खेती का राष्ट्रीकरण, सामूहिक व सहकारी खेती, खेती में खोत पद्धति

का उन्मूलन, खाद, बीज और सिंचाई सरकार की और से बजट में खेती के अधिक राशि, निजी साहुकारों पर नियत्रंण। नोबल पुरस्कार प्राप्त अर्थशास्त्री डा॰ अमर्त्य सेन ने डा॰ अम्बेडकर को पितातुल्य माना। देश का विकास औद्योगीकरण से होगा इसका भी महत्व बताया। आर बी आई, योजना आयोग की स्थापना उनके शोध प्रबंधों के आधार पर हुई।

श्रम मन्त्री

बाबा साहेब आम्बेडकर 1942-1946 के काल में वायसराय की काउंसिल में श्रम मंत्री के रूप् में कार्य किया। श्रम मंत्री के रूप में उन्होंने मजदूर तथा मालिकों को मिलाकर औद्योगिक क्षेत्र के लिए नई-नई नीतियां स्थापित कीं। इनमें से प्रमुख हैं- मजदूरों का न्यूनतम वेतन, काम के घण्टे, मजदूरों की भविष्य निधि, सस्ते मूल्य के अनाज की व्यवस्था, कारखानों में जलपान गृह, विश्राम आदि एवं श्रम मंत्री के नाते बाबासाहेब ने जो कार्य किया, दुर्भाग्य से उसका योग्य मूल्यांकन नहीं हो सका। महिलाओं के लिए भी उन्होंने अनेक सुविधाएँ यथा मातृत्व अवकाश के रूप् में अवकाश देने का प्रावधान रखा। बाबासाहेब ने 1928 के मेटेरनिटी बेनिफिट बिल के पक्ष में विचार रखे।

आज भी बाबासाहेब के विचार व कार्य मजदूरों के बीच में तथा पूरे संगठित क्षेत्र एवं असंगठित क्षेत्र में सभी के लिए प्रासंगिक हैं। उस परिप्रेक्ष्य में हम आज की परिस्थितियों से कैसा तादात्म्य बैठा सकते हैं, यह विचार का विषय है।

संविधान रचयिता

30 अगस्त, 1947 को डा॰ अम्बेडकर को संविधान सभा की प्रारूप समिति का अध्यक्ष चुना गया। प्रारूप् समिति के सात सदस्य थे। जिनमें एक का देहांत हो गया, एक विदेश चले गये, एक व्यक्ति ने त्याग पत्र दे दिया, दो व्यक्ति दिल्ली से दूर और अस्वस्थ थे। अतः संविधान का प्रारूप तैयार करने का सारा दायित्व डा॰ अम्बेडकर पर आ पड़ा। 26 नवम्बर, 1949 संविधान को तैयार कर संविधान सभा को सौंपा गया एवं इसी सभा के माध्यम से राष्ट्र को समर्पित किया।

विधि मंत्री

बाबा साहेब विधि मंत्री के रूप में हिन्दू कोड बिल के शिल्पकार थे। हिन्दू कोड बिल के माध्यम से महिलाओं को समान अधिकार व सम्मान मिले इसके वह प्रबल समर्थक थे। हिन्दू कोड बिल में विधवा को पुनर्विवाह, मृतक पति की सम्पति में अधिकार, नारी मुक्ति का अधिकार, गोद लेने का अधिकार आदि का प्रावधान रखा। हिन्दू कोड बिल में सभी हिन्दु-सिख, बौद्ध, जैन आदि विभिन्न भारतीय मूल के सभी सम्प्रदाय सम्मलित किए और इस बिल के संसद में पारित न होने की स्थिति में 1951 में विधि मंत्री पद से इस्तीफा दिया। इस्तीफा देते वक्त कहा कि 'हिन्दू कोड बिल में लिए संविधान बनाने से भी अधिक महत्वपूर्ण है'।

बोधिसत्व

बाबा साहेब ने 1935 में घोषणा कि ''दुर्भाग्य से मैं अस्पृश्य जाति में जन्मा हुं, यह मेरा कोई अपराध नहीं, फिर भी मैं हिन्दू के रूप में नहीं मरूंगा''। यह कहते हुए बौद्ध धर्म अंगीकार किया। सन् 1935 की यह घोषणा जाति व्यवस्था की समाप्ति पर अंतिम कड़ा प्रहार की। विभिन्न मत सम्प्रदायों द्वारा प्रभोलन मिला किन्तु 21 साल बाद 14 अक्टूबर, 1956 नागपुर में बौद्ध धर्म दीक्षा ग्रहण की जिसकी जड़ें, दर्शन और आत्मा भारत में बसती है। बौद्ध भिक्षु, महास्थविर चन्द्रमणि जी महाराज ने घोषणा की बौद्ध और हिन्दु एक वृक्ष की शाखाऐं हैं। संविधान में 'स्वतंत्रता, समता और बन्धुत्व'' का विचार तथागत बुद्ध से प्रेरित है। तथागत बुद्ध के केन्द्रबिन्दु में धम्म है, बाबा साहेब भी धम्म को भारतीय दर्शन की आत्मा मानते थे।

राष्ट्र चिंतक

बाबा साहेब का सम्पूर्ण जीवन देश के वंचितो एवं दलितों के लिए समर्पित था। उनका मानना था कि महिलाओं के विकास के बिना विकास अपूर्ण है। अपने जीवन के आरंभ से लेकर अन्त तक हम भारतीय हैं इस भाव को जागृत रखा। जहाँ एक और बिट्रिश सरकार से अस्पृश्यता के लिए समान अधिकार व शिक्षा की मांग करते थे वहीं दूसरी ओर ब्रिटिश आर्थिक शोषण को अपने शोध ग्रन्थों में स्पष्ट किया। समानता के बिना स्वतन्त्रता निरर्थक है, समानता, स्वतन्त्रता और बन्धुत्व का विचार उनके बौद्ध दर्शन का परिचायक है। इस दर्शन के बिना समाज में समरसता नहीं होगी इस पर उनका दृढ़मत रहा। संविधान के रूप में भारत को अनुपम भेंट देकर भारत को एकीकृत, संगठित राष्ट्र बनाने में उनका अतुलनीय योगदान आज भी प्रासंगिक है। वे भाषाओं के आधार पर राज्यों के निर्माण के विरोधी थे एवं देश की अखण्डता के लिए वह 370 धारा को घातक मानते थे। हैदराबाद में सेना भेजने का स्वागत किया। बाबा साहेब का जीवन, दर्शन और कृतित्व में राष्ट्रीय निष्ठा में सर्वोच्च स्थान था। ■

(लेखक दिल्ली विश्वविद्यालय के डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय में राजनीति शास्त्र के प्राध्यापक हैं।)

हरियाणा में अभाविप ने बजाया जीत का डंका

हरियाणा के छात्र संघ चुनाव में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् ने जीत का डंका बजाया है। अभाविप ने प्रदेश के सभी 11 विश्वविद्यालयों में सभी पदों पर अपने प्रत्याशी उतारे जिसमें से पांच विश्वविद्यालयों में अध्यक्ष समेत अन्य पदों पर जीत का परचम लहराया वहीं अन्य छः विश्वविद्यालयों में उपाध्यक्ष, सचिव एवं सह - सचिव जैसे पदों पर शानदार जीत हासिल की। 11 विश्वविद्यालयों के 44 पदों में परिषद् नें 26 पर जीत हासिल की जिसमें पांच अध्यक्ष, आठ उपाध्यक्ष, सात सचिव और छः सयुक्त सचिव के पद पर हासिल की है। महाविद्यालयीन चुनाव की बात करें तो राज्य के लगभग 150 महाविद्यालय में विद्यार्थी परिषद् ने अपने उम्मीदवार उतारे, जिसमें 115 महाविद्यालय में अध्यक्ष, 116 में उपाध्यक्ष, 115 में सचिव और 110 महाविद्यालयों में संयुक्त सचिव के पदों पर जीत दर्ज की। वहीं छात्र संघ में कार्यकारी परिषद् सदस्य के रूप में भी बड़ी संख्या में अभाविप के कार्यकर्ता चुने गये हैं।

अभाविप की जीत पर हरियाणा के प्रांत संगठन मंत्री श्याम सिंह राजावत ने कहा कि चुनाव के नतीजों के बाद राज्य का प्रत्येक विश्वविद्यालय परिसर भगवा रंग में रंगा नजर आ रहा है। बड़ी संख्या में छात्र समुदाय अभाविप के साथ जुड़ रहा है। प्रदेश की छात्रशक्ति ने भी बता दिया कि वह परिसर में 365 दिन रहने वाली छात्र संगठन अभाविप के साथ खड़ी है। श्री राजावत ने कहा कि इस छात्रसंघ चुनाव में कई छात्र संगठनों के द्वारा चुनाव बहिष्कार का स्वांग भी रचा गया। एक तरफ तथाकथित संगठनों के द्वारा चुनाव को बहिष्कार किया जाता है तो वहीं दूसरी तरफ गुपचुप तरीके से अपने कार्यकर्ताओं के द्वारा नामांकन दाखिल करवाया जाता है लेकिन छात्रों ने इनके मंसूबों पर पानी फेर दिया और उनलोगों को मुंह की खानी पड़ी। चुनावी नतीजों के बाद बड़ी संख्या में छात्र अभाविप के साथ जुड़ने लगे हैं और आने वाले समय में यह छात्र तरूणाई प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन में अपनी अहम भूमिका निभाएगी। उन्होंने कहा कि 22 साल बाद हुए छात्र संघ चुनाव को शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न करवाकर हरियाणा के छात्रों ने देश भर में एक अच्छा संदेश देने का काम किया है।

वहीं विद्यार्थी परिषद् के प्रदेश मंत्री सुनील भारद्वाज ने जीत पर खुशी जाहिर करते हुए कहा कि छात्रों ने हरियाणा में वंशवाद व परिवारवाद की राजनीति को खत्म करने में अहम भूमिका निभाई है। तथाकथित छात्र संगठनों ने अपने राजनीतिक आका को खुश करने के लिए सुनियोजित तरीके से छात्र संघ चुनाव का बहिष्कार किया था, ताकि छात्रों को प्रत्यक्ष भागीदारी से दूर रख सके लेकिन राज्य के विद्यार्थियों ने इनके बहिष्कार के विरोध में दोगुने उत्साह से छात्रसंघ चुनाव में भाग लिया, जिसके लिए मैं तहे दिल से सभी छात्रों को बधाई देता हूं। उन्होंने कहा कि परिषद् प्रदेश में डीयू व पीयू के तर्ज पर प्रत्यक्ष रूप से छात्र संघ चुनाव करवाने की अपनी मांग को लेकर अपना आंदोलन आगे भी जारी रखेगी व अगले वर्ष से प्रदेश में प्रत्यक्ष प्रणाली से छात्र संघ चुनाव बहाल करवाकर ही दम लेगी। श्री भारद्वाज ने बताया कि अभाविप अपने जीत हुए सभी छात्र संघ पदाधिकारियों का प्रांत स्तर पर एक सम्मेलन आयोजित करने वाली है। ■

महात्मा गांधी की सार्धशती पर विशेष श्रृंखला-3

पहचान की पहली प्राथमिकता: गांधी और गाय

।डा. जयप्रकाश सिंह।

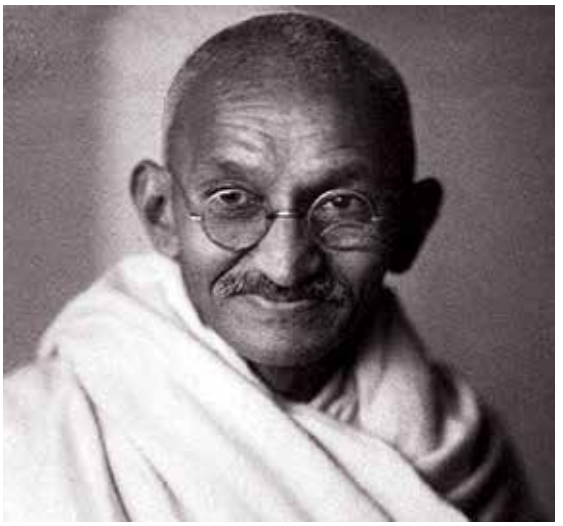

भारतीय संस्कृति में सदा ही गाय केन्द्रीय भूमिका में रही है। इस केन्द्रीय भूमिका के संदर्भ में भारतीय जनमानस में हमेशा से ही एक साफ समझ रही है। इस केन्द्रीय भूमिका और महत्ता को रेखांकित करते हुए ऋषि प्रसिद्ध गोसूक्त में कहता है कि -

माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः।
प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागामदितिं वधिष्ट।[1]

आशय यह है कि गाय रुद्रों की माता, वसुओं की पुत्री, आदित्यों की बहन, अमृत की नाभि है। उस गाय का वध न करें।

इस सूक्त में प्रकट हुई भावना के अनुरूप ही इस देश में कभी भी गाय को दूध देने वाले पशु के रूप में नहीं स्वीकार किया गया, बल्कि पंचगव्यों से प्रकृति और मनुष्य को हर स्तर पर पोषित करने वाली अमृत की नाभि के रूप में देखा गया। इसी कारण माता का उदात्त और आत्मीय सम्बोधन गाय को प्राप्त हुआ। गाय को केवल पशु के रूप में स्वीकार करने की प्रवृत्ति के प्रति भारतीय प्रज्ञा यहां के लोगों को सावधान करती रही है। रघुवंश में महाराजा दिलीप को सावधान करते हुए नन्दिनी कहती है कि -

ना केवलां पयसां प्रसूतिमवेहि मां कामदुधां भजे।
(प्रसन्न रहने पर सभी कामनाओं की पूर्ति करने वाली मुझको केवल दूध देने वाली मत समझना।)

भारतीय जनमानस गाय को कल्याणकाली प्रज्ञा और परम्परा के ऊर्जास्रोत के रूप में ग्रहण किया और अपनी इस तरह गाय भारत की पहचान और प्राथमिकता बन गई। भारत गाय के संरक्षण और संवर्द्धन के लिए अपना सब कुछ दांव पर लगाता रहा है। इस्लामिक आक्रमणों की लम्बी समयावधि में गाय को निशाना बनाने के कोशिशें होती रहीं, लेकिन गाय को लेकर भारतीय जनमानस में श्रद्धा और जनसंवेग इतना प्रबल था कि उनकी उपेक्षा करके शासन करना असम्भव था। इसीलिए कई आक्रांताओं को गोवध पर प्रतिबंध लगाना पड़ा।

गाय के प्रति भारतीय जनमानस की इस स्पष्ट समझ पर कुहासा डालने के विधिवत प्रयास औपनिवेशिक काल में प्रारंभ हुए। अपनी विशिष्ट दृष्टि के कारण तत्कालीन सत्ता गाय को आर्थिक दायरे से आगे बढ़कर सांस्कृतिक संदर्भों में समझने को तैयार नहीं थे। जो गाय भारत के धार्मिक-सांस्कृतिक चिन्तन के केन्द्र में है, और जिसके बिना भारतीय पहचान की ठीक ढंग से कल्पना भी नहीं की जा सकती, उसे औपनिवेशिक विद्वानों और शासकों ने पिछड़ेपन का सबसे बड़ा प्रतीक ठहरा दिया। मैक्समूलर एक जगह लिखता है कि - हिन्दुओं में एक बुद्धिरहित, निरर्थक, गंदा, बर्बर-पाशविक तत्व है। अफ्रीका और अमेरिका के जो सबसे निकृष्ट कबीले हैं, उनमें भी इतनी वीभत्स, घिनौनी और देखते ही मन में जुगुप्सा-जन्य विद्रोह भड़का देने वाली प्रथा शायद ही हो, जैसी की पशु-पूजा की प्रथा हिन्दुओं में है। यह तो अधोगति की निम्नतम दशा है, अतलतम गहराई है।[2]

इस औपनिवेशिक दृष्टि के खिलाफ धार्मिक स्तर पर आवाजें हमेशा से ही उठती रहीं, लेकिन औपनिवेशिक शासनकाल के दौरान सामान्य लोगों के जनसामान्य को

इस मुद्दे पर संवेदित करने में गांधी की अहम भूमिका रही। भारतीय संदर्भों में गाय की भूमिका और महत्व को लेकर गांधी की समझ कितनी स्पष्ट और असंदिग्ध थी, इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उन्होंने गाय के प्रश्न को स्वाधीनता के प्रश्न से भी महत्वपूर्ण माना है- कई बातों में मैं गोरक्षा के प्रश्न को स्वराज्य के प्रश्न से भी बड़ा मानता हूं। ...जब तक हम यह न जान लें कि गोरक्षा किस तरह करनी चाहिए, तब तक स्वराज्य की कोई स्थिति नहीं है।[3] उनके लिए स्वराज्य इसलिए आवश्यक है क्योंकि वह हमें गोरक्षा की शक्ति प्रदान करेगा- स्वराज्य हमें गोरक्षा की शक्ति देगा।[4]

गांधी की प्राथमिकताओं में सबसे ऊपर गाय का प्रश्न है। वह गोसंरक्षण और गोसंवर्द्धन के प्रश्न को भावनात्मक स्तर पर ही नहीं लेते उसके लिए ठोस प्रयास भी करते हैं। क्योंकि हिन्दू अपने धर्म के निर्देशानुसार गोरक्षा का कर्तव्य करने में विफल रहे हैं और क्योंकि भारत में गोवंश का दिन पर दिन हास और क्षय हो रहा है, अतः उस धर्मकर्तव्य के पालन के लिए गोसेवा संघ गठित किया जाता है। संघ का लक्ष्य होगा-सभी नैतिक उपायों द्वारा गोवंश का संरक्षण।[5] इसके सदस्यों को कर्तव्य होगा कि वे यथासम्भव, गाय के दूध का ही सेवन करें, मृत पशुओं के चमड़े के जूते आदि का इस्तेमाल करें। दूध के लिए भैंसे नहीं, गाय ही पालें और गाय ही पालने को प्रोत्साहन दें।[6]

बीसवीं सदी के तीसरे दशक के बाद तो गांधी जी के आंदोलनात्मक, सृजनात्मक और वैचारिक गतिविधियों में गोसेवा और हरिजन सेवा ने केन्द्रीय स्थान प्राप्त कर लिया था। सन 1940 के सत्याग्रह से गोसेवा के काम में कुछ व्यवधान आया। किन्तु जब श्री जमनालाल बजाज, स्वास्थ्य बिगड़ने के कारण, जेल से रिहा कर दिए गए तब महात्मा गांधी ने उनसे कहा कि क्योंकि स्वास्थ्य लाभ के लिए छोडे.हुए व्यक्ति को पूर्ण स्वस्थ हुए बिना फिर से सत्याग्रह में नहीं जाना चाहिए, इसलिए मेरे सर्वाधिक प्रिय दो कामो-हरिजन सेवा और गोसेवा में से गोसेवा का काम तुम उठा लो तो मुझे संतोष होगा।[7]

दुर्भाग्यवश, गांधी का आकलन करते समय गाय का परिप्रेक्ष्य पूरी तरह से गायब कर दिया जाता है। और बड़ी चालाकी से पंथनिरपेक्षता को गांधी के आकलन का सबसे बड़ा आधार बना दिया गया। जिन गांधी की दृष्टि में गोवध और मनुष्यवध एक ही बात है[8] और गोरक्षा के प्रश्न का स्वराज से भी बड़ा प्रश्न मानते थे, उनके आकलन का सबसे वृहद और स्वाभाविक आधार उनका गोचिन्तन ही हो सकता था। गांधी का गोरक्षण और गोसंवर्द्धन सम्बंधी चिन्तन आज भारत के लिए आवश्यक है ही, गांधी के यथार्थ आकलन के लिए भी यह उतना ही आवश्यक बन गया है।

(लेखक - लेखक हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय में जनसंचार विषय के सहायक आचार्य हैं।)

संदर्भ -

1. *गोसूक्त, अथर्ववेद 10/10*
2. *सांस्कृतिक अस्मिता की प्रतीक-गोमाता, रामेश्वर मिश्र पंकज, भारत-भारती, नई दिल्ली, 1992, पृष्ठ 74 पर उद्धृत*
3. *सम्पूर्ण गांधी वांगमय, खण्ड 25, पृष्ठ 549*
4. *उत्तर प्रदेश में गांधीजी, सम्पादक, रामनाथ सुमन, पृष्ठ 136*
5. *यंग इडिया, 6 जून, 1929*
6. *वही*
7. *सांस्कृतिक अस्मिता की प्रतीक-गोमाता, उपरोक्त, 183*
8. *सम्पूर्ण गांधी वांगमय, खण्ड 25, 552*

प्रिय मित्रों !

शिक्षा - क्षेत्र की प्रतिनिधि - पत्रिका के रूप में 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' का नवंबर 2018 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत हैं। यह अंक महत्वूर्ण लेख एवं विभिन्न समसामयिक घटनाक्रमों व खबरों को समाहित किए हुए हैं। आशा है, यह अंक आपके आवश्यकताओं के अनुरूप उपादेय साबित होगा। कृपया 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' से संबंधित अपने सुझाव व विचार हमें नीचे दिए गए संपादकीय कार्यालय के पते अथवा ई - मेल पर अवश्य भेजें : -

'राष्ट्रीय छात्रशक्ति'
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नयी दिल्ली - 110002.
फोन : 011-23216298
chhatrashakti.abvp@gmail.com
www.facebook.com/rashtriyachhatrashakti
www.twitter.com/chhatrashakti1

विजयादशमी के अवसर पर रा.स्व.संघ के सरसंघचालक का उद्बोधन

कानून बनाकर हो भव्य राम मंदिर का निर्माण

नागपुर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 93वें स्थापना दिवस पर आयोजित कार्यक्रम के अपने संबोधन में सरसंघचालक मोहन भागवत ने राष्ट्रीय हितों से जुड़े महत्वपूर्ण मुद्दों पर बात की और सरकार से कानून बनाकर राम मंदिर बनाने के मार्ग को प्रशस्त करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि यह हिंदू-मुसलमान का मसला नहीं है। यह भारत का प्रतीक है और जिस रास्ते से मंदिर निर्माण संभव है, मंदिर का निर्माण होना चाहिए। उन्होंने कहा कि न्यायिक प्रक्रिया में तरह-तरह की नई बातें उपस्थित कर निर्णय न होने देने का स्पष्ट खेल कतिपय शक्तियों द्वारा चल रहा है। समाज के धैर्य की बिनाकारण परीक्षा यह किसी के हित में नहीं है। मंदिर का बनना स्वगौरव की दृष्टि से आवश्यक है ही, मंदिर बनने से देश में सद्भावना व एकात्मता का वातावरण बनना प्रारम्भ होगा। देशहित की इस बात में कुछ कट्टरपंथी व सांप्रदायिक राजनीति को उभारकर अपना स्वार्थसाधन करनेवाली शक्तियाँ बाधाएँ खड़ी कर रही हैं।

केरल के प्रसिद्ध सबरीमाला मंदिर मुद्दे पर श्री भागवत ने कहा कि स्त्री पुरुष समानता अच्छी बात है, लेकिन सालों से चली आ रही परंपरा का सम्मान नहीं किया गया। सैकड़ों वर्षों से चलती आयी परम्परा, जो समाज में अपनी स्वीकार्यता बना चुकी है, उसके स्वरूप व कारणों के मूल का विचार नहीं किया गया। धार्मिक परम्पराओं के प्रमुख कर्ताधर्ताओं का पक्ष, करोड़ों भक्तों की श्रद्धा का संदर्भ नहीं लिया। महिलाओं में भी बहुत बड़ा वर्ग जो इन नियमों को मानकर चलता है, उनकी बात नहीं सुनी गयी। कानूनी निर्णय से समाज में शांति, सुस्थिरता व समानता के स्थान पर अशांति, अस्थिरता व भेदों का सृजन हुआ। क्यों, हिन्दू समाज की श्रद्धाओं पर ही ऐसे आघात लगातार व बिना संकोच किये जाते हैं, ऐसे प्रश्न समाज मन में उठते हैं व असंतोष की स्थिति बनती चली जाती है। यह स्थिति समाज जीवन की स्वस्थता व शांति के लिये कतई ठीक नहीं है।

समाज में भटकाव, अलगाव, हिंसा, अत्यंत विषाक्त द्वेष तथा देश विरोधी वातावरण खड़ा करने के प्रयासों एवं आंतिरक सुरक्षा से जुड़ी चिंताओं को अभिव्यक्त करते हुए श्री भागवत ने कहा कि भारत के अंदर होने वाली हिंसा हमारे देश के लिए ठीक नहीं है। अर्बन नक्सलवाद के खतरे को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि इनके द्वारा पहले छोटे-छोटे अनेक संगठनों के जाल फैलाकर तथा छात्रावास आदि में लगातार संपर्क के माध्यम से एक वैचारिक अनुयायी वर्ग खड़ा किया जाता है। फिर उग्र व हिंसक कार्यवाईयों को छोटे-बड़े आन्दोलनों में घुसाकर, अराजकता का अनुभव देकर, उन अनुयायियों में प्रशासन व कानून का डर तथा नागरिक अनुशासन का डर समाप्त किया जाता है। दूसरी ओर समाज में आपस में व स्थापित व्यवस्था व नेतृत्व के बारे में तिरस्कार व द्वेष उत्पन्न किया जाता है। ऐसी अचानक उग्र रूप लेनेवाली घटनाओं के माध्यम से समाज के सब अंगों में प्रस्थापित सभी विचारों का नेतृत्व, जो समाज व्यवस्था व नागरिक व्यवहार की भद्रता के अनुशासन से कम अधिक मात्रा में ही सही बंधा रहता है, अचानक ध्वस्त किया जाता है। नया अपरिचित, अनियंत्रित, केवल नक्सली नेतृत्व से ही बँधा हुआ अंधानुयायी व खुला पक्षपाती नेतृत्व स्थापित करना, यह इन शहरी माओवादियों की ही नव वामपंथी कार्यपद्धति है। ऐसी स्थिति में शासन-प्रशासन को सजग होकर, समाज में एक और ऐसी घटनाएँ न घट पायें,जिनका लाभ उपद्रवी शक्तियाँ ले पावें; तथा दूसरी ओर ऐसी उपद्रवी शक्तियों व व्यक्तियों पर चैकस नजर रखकर वे उपद्रवी कार्यवाई न कर पायें यह करना पड़ेगा। साथ ही समाज के सभी वर्गों में, बुद्धि व भावना सहित आचरण में, आपस में सद्भावना व अपनेपन का व्यवहार हो, पंथ-सम्प्रदाय, जाति-उपजाति, भाषा, प्रान्त आदि की

विविधता को हम एकता की दृष्टि से देखें, वर्गविशेष की समस्या व परिस्थिति को अपना दायित्व मानकर सारा समाज मिल-बैठकर उसका न्याय व सद्भावनापूर्वक हल ढूँढे, इसके लिए आपस में निरंतर आत्मीय संवाद हो सके ऐसा वातावरण अपने संपर्क व संबंधों को बढ़ाकर उत्पन्न करें। अपने जीवन व्यवहार में नागरिक अनुशासन व कानून व्यवस्था की मर्यादा का आचरण करें। हमारे राजनेताओं सहित समाज के प्रत्येक व्यक्ति को बाबासाहेब आम्बेडकर का (25 नवम्बर 1949 का) वह प्रसिद्ध भाषण नित्य स्मरण में रखना चाहिए जिसमें वे परामर्श देते हैं कि न्याय, समता व स्वातंत्र्य की दिशा में देश का बढ़ना, राजनीतिक व आर्थिक प्रजातंत्र के साथ सामाजिक प्रजातंत्र की ओर बढ़ना, समाज में बंधुभाव के व्यापक प्रसार के बिना संभव नहीं। बिना उसके इन प्रजातांत्रिक मूल्यों की व अपनी स्वतंत्रता की भी सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है।

बाह्य सुरक्षा के विषय की तरफ राष्ट्र के ध्यान आकृष्ट कराते हुए श्री भागवत ने कहा कि सागरी सीमा की सुरक्षा एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण विषय है। मुख्यभूमि से लगे सागरी क्षेत्र में कम अधिक दूरी पर भारत में अंतर्भूत सैकड़ों द्वीप हैं। अंडमान निकोबार द्वीप समूह सहित ये सभी द्वीप सामरिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण स्थानों पर स्थित हैं। उनकी निगरानी व्यवस्था तथा सुरक्षा की दृष्टि से वहाँ की व्यवस्था के सबलीकरण के कार्य को अतिशीघ्रता से ध्यान देकर पूर्ण करना चाहिए। सागरी सीमा व द्वीपों पर ध्यान देनेवाली नौसेना तथा अन्य बल इन में आपसी तालमेल, सहयोग व साधनसंपन्नता पर शीघ्र अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। भू तथा सागरी सीमावर्ती क्षेत्र में रहनेवाले अपने बंधु कई सीमा विशिष्ट परिस्थितियों का सामना करते हुए भी धैर्यपूर्वक डटे रहते आये हैं। उनकी वहाँ व्यवस्था ठीक रहे तो आतंकी घुसपैठ, तस्करी आदि समस्याओं को कम करने में वे सहायक भी हो सकते हैं। उनको समय-समय पर उचित राहत मिले, रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि की व्यवस्था उन तक पहुँचती रहे तथा उनमें साहस, संस्कार व देशभक्ति की उत्कटता बनी रहे, इसके लिए शासन व समाज दोनों के प्रयास अधिक बढ़ाने की आवश्यकता है।

तकनीकी युग में पारिवारिक संस्कार के क्षय होते माहौल पर श्री मोहन भागवत ने कहा कि हमारी स्वाभाविक आत्मीयता, पारिवारिक व सामाजिक दायित्वबोध, स्वविवेक का निर्माण आदि संस्कारों को लेकर हम नई पीढ़ी के प्रति दायित्व ठीक से निभा रहे हैं यह सजगता से देखने की आवश्यकता है। बदला हुआ समय, उसमें बढ़ा हुआ प्रसार माध्यमों का व्यापक प्रसार व प्रभाव, नई तकनीकी के माध्यम से व्यक्ति को अधिक आत्मकेन्द्रित बनानेवाले तथा व्यक्ति के विवेकबुद्धि को समझे बिना विश्व की सारी सही-गलत सूचनाओं व ज्ञान को उससे साक्षात् करानेवाले साधन, इसमें बहुत सावधानी बरतने की आवश्यकता विश्व में सभी को प्रतीत हो रही है। ऐसे समय में परिवार की स्वपरंपरा के सुसंस्कार मिलते रहे, यह आवश्यक है। नई दुनिया में जो भद्र है उसे खुले मन से आत्मसात करते हुए भी अपने मूल्यबोध के आधार पर अभद्र से बचने-बचाने का नीर-क्षीर विवेक, उदाहरण व आत्मीयता से नयी पीढ़ी में भरना ही होगा। देश में पारिवारिक क्लेश, ऋणग्रस्तता, निकट के ही व्यक्तियों द्वारा बलात्कार-व्यभिचार, आत्महत्यायें तथा जातीय संघर्ष व भेदभाव की घटनाओं के समाचार निश्चित ही पीड़ादायक व चिंताजनक है। इन समस्याओं का समाधान भी अंततोगत्वा स्नेह व आत्मीयपूर्ण पारिवारिक वातावरण एवं सामाजिक सद्भाव निर्माण करने में ही है। इस दृष्टि से समाज के सुधी वर्ग एवं प्रमुख प्रबुद्धजनों सहित संपूर्ण समाज को इस दिशा में कर्तव्यरत होना पडेगा।

विचारपूर्वक 100 प्रतिशत मतदान करने का आह्वान करते हुए श्री भागवत ने कहा कि प्रजातंत्र की राजनीति का चरित्र ऐसा रहता आया है कि संपूर्णतया योग्य अथवा संपूर्णतया अयोग्य किसी को नहीं मान सकते। ऐसी स्थिति में मतदान न करना अथवा नोटा (NOTA) के अधिकार का उपयोग करना, मतदाता की दृष्टि में जो सबसे अयोग्य है उसी के पक्ष में जाता है। इसलिए सभी तरफ के प्रचार को सुनकर, उसके जाल में न फंसते हुए राष्ट्रहित सर्वोपरि रखकर 100 प्रतिशत मतदान आवश्यक है। अपने संबोधन श्री भागवत ने गुरु नानक देव जी के 550 वें प्रकाश पर्व, महात्मा गाँधी के 150 वें जन्मदिवस वर्ष एवं जलियाँवाला बाग हत्याकांड के 100वें वर्ष के ऐतिहासिक महत्व का जिक्र करते हुए कहा कि आज भी कई शक्तियाँ तरह-तरह के कुचक्र चलाकर देश की राह में रोड़े अटकाने से बाज नहीं आयी हैं। कई चुनौतियों को हमें अभी पार करना है। ऐसे में हमारे पूर्वज महापुरुषों द्वारा स्वयं के जीवन के उदाहरण से, उपदेश से जो सत्यनिष्ठा, प्रेम, त्याग, पवित्रता व तपस् के आदर्श समाज में स्थापित व आचरण में प्रवर्तित किये गये, उन्हीं पर चलकर हम इस सर्वांगपरिपूर्ण राष्ट्रीय जीवन को लक्षित कार्य को कर सकेंगे। ■

Now it's Sabarimala, next on 'secular radar' is Amarnath

| Rati Hegde |

Early this year, the Supreme Court urged the Jagannath temple administration in Odisha to consider allowing non-Hindus to enter the temple, saying that Hinduism doesn't eliminate any other faith and is the eternal faith, wisdom and inspiration of centuries. Justices Adarsh Kumar Goel and Ashok Bhushan suggested that people of other faiths be allowed provided they agree to comply with the rules and traditions. They quoted Krishna as telling Arjuna in the Bhagavad Gita that those who worship other Gods with full faith also worship Him. They also suggested, "The temple management may consider, subject to regulatory measures with regard to a dress code, giving an appropriate declaration permitting every visitor, irrespective of his faith, to offer respects and make offerings to the deity." This was rejected by the Royal family of Puri and the Shankaracharya of Puri.

The problem is that we Hindus have believed in the 'Hinduism is a way of life' ruling by our Supreme Court so much that now we are totally confused as to who a Hindu really is. And herein lies the danger. Ask any Christian or Muslim as to who a Christian or Muslim is and they will boldly tell you without any confusion about their religion. They will also tell you equally strongly that theirs is the only 'True' religion and that people of other religions need 'saving' and that is why they proselytize. They actually believe it. Ask a Hindu and he will say 'Vasudaiva Kutumbakam' it sounds very idealistic and Divine, but the problem is that the others misuse these very concepts to harm our 'way of life'.

Look at what is happening in Sabarimala. "It is a historically accepted fact that Sabarimala is a secular temple where entry of devotees is not restricted on the ground of any caste or religion," the affidavit filed by the Kerala CPM Government before the High Court says. Therefore according to them, the Waqf Board, Muslim organisations, Christian organisations, etc. are necessary parties in Sabarimala issue. What? Not happy with this, the affidavit also raises questions over the ownership of the temple using an oft flaunted rumour (because the word 'Sharanam' is used) that Sabarimala was a Buddhist temple. To substantiate their argument the affidavit highlighted the importance of Vavar Mosque and its connections with the temple traditions like Peta Thullal. It also said that Harivarasanam song which is played in the temple is sung by KJ Yesudas, a Christian. (Yesudas is a practicing Hindu.)

Obviously some people have missed the fact that it is converts who have shown a keen interest in desecrating the Temple in accordance to the Supreme Court ruling that women of all ages can visit Sabarimala. Hindu woman devotees are prepared to wait.

Some years ago, a tale was spread about the Amarnath cave in Kashmir. According to an ancient tale, Botta Malik, a Muslim shepherd was given a sack of coal by a sadhu and upon reaching home he discovered that the sack contained gold. Overjoyed, Botta Malik rushed back to look for the Sadhu to thank him. But at the spot of their meeting he discovered a cave, and eventually this became a place of pilgrimage for Hindus. "Since the origin of the cave, founded by our ancestor Botta Malik, we've been serving the devotees (yatries)." said Ghulam Qadir Malik, President Founders and Beneficiaries of Amarnath cave. It doesn't matter that the cave was mentioned in various Hindu scriptures or that the cave itself is found to be over 5,000 years old. We were told that a Muslim found it about 300 years back. Till the Amarnath Shrine Board took over the cave in 2000, one-third of all donations by the pilgrims was given to the descendents of Malik and the rest to trust which manages the cave shrine. About 300 families of the Maliks were dependent on the Yatra. The Board paid Rs.1.5 crores to two parties of the Malik family as a compensation. One party refused to take any compensation and are protesting.

Tirupati Temple already has had Christians being allowed into their board and even in the making of the Prasadam.

Do not be surprised if soon the Amarnath Cave, Jagannath Puri Temple, Tirupati Temple and the other Hindu temples where people of all religions are allowed to enter will be declared as 'Secular' Temples by our Judiciary, with the full backing of our distorted Constitution. Hindus will be left with only Hundis (donation boxes) to drop their donation into. ■

खबर

केरल : अभाविप कार्यालय पर पेट्रोल बम से हमला

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री आशीष चौहान ने कहा कि अभाविप, केरल के कार्यालय पर किया गया हमला एस.एफ.आई. की कायरतापूर्ण मानसिकता को दर्शाता है। उन्होंने कहा केरल के छात्रों का अभाविप के प्रति बढ़ता विश्वास वामपंथियों को हजम नहीं हो रहा है, जिस कारण वे हिंसा का सहारा ले रहे हैं। हाल में सपन्न महाविद्यालयीन छात्रसंघ चुनाव में अधिकांश जगहों पर अभाविप के कार्यकर्ताओं की जीत हुई है, कई ऐसे जगह हैं जो कभी वामपंथ का गढ़ कहा जाता था वहां से भी उसका सफाया हो गया है। बता दें कि पिछले 24 अक्टूबर की रात को अभाविप के कार्यालय पर पेट्रोल बम से हमला किया गया था, अभाविप के मुताबिक यह हमला एस.एफ.आई. के लोगों ने की है।

गौरतलब है कि वर्षों से केरल में अभाविप, रा. स्व. संघ एवं इससे संबंद्ध विचारधारा वाले कार्यकर्ताओं को लगातार निशाना बनाया जा रहा है, विद्यार्थी परिषद् की मानें तो एस.एफ.आई. एवं सीपीआईएम द्वारा केरल में मासूम विद्यार्थियों तथा कार्यकर्ताओं पर दिन-दहाड़े वार किया जा रहा एवं उनकी नृशंस हत्या की जा रही है। वामपंथियों के बढ़ते के हिंसा के विरोध में ही पिछले वर्ष अभाविप के द्वारा केरल की भूमि पर विशाल रैली का आयोजन किया गया था जिसमें देश भर के हजारों छात्रों ने खूनी हिंसा के खिलाफ अपनी आवाज बुंलद की थी। अभाविप द्वारा लगातार इस विषय को उठाने के बावजूद भी केरल सरकार तथा पुलिस प्रशासन द्वारा कोई ठोस कदम न उठाया जाना एवं दोषियों का खुलेआम घूमना राज्य सरकार की सभी हमलों में सहापराधिता को प्रमाणित करता है।

घटना पर रोष व्यक्त करते हुए अभाविप महामंत्री आशीष चौहान ने कहा कि केरल में अभाविप के कार्यकर्ताओं पर लगातार एस.एफ.आई. द्वारा किए जा रहे हमले की कायरता को दर्शाता है। अभाविप इन शर्मनाक घटनाओं की कठोर शब्दों में भर्त्सना करती है तथा केरल सरकार से अपनी संबंधित विचारधारा एवं पक्षपातपूर्ण राजनीति से ऊपर उठकर सभी विद्यार्थियों की सुरक्षा को सुनिश्चित करने की मांग करती है। ■

टीपू की जयंती और पटेल की प्रतिमा का विरोध! क्या विपक्ष दिशाहीन हो गया?

31 अक्टूबर 2018 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा भारत में दुनिया के सबसे बड़े स्मारक 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' का अनावरण किया गया। यह प्रतिमा भारत को एकता के सूत्र में पिरोने वाले लौह पुरूष सरदार वल्लभ भाई पटेल की है। बता दें कि सरदार पटेल ने 565 रियासतों में बिखरे देश को एक सूत्र में पिरोकर महान गणतंत्र की नींव मजबूत की थी। स्टैच्यू ऑफ यूनिटी दुनिया की सबसे ऊंची 182 मीटर की है, इससे पहले दुनिया की सबसे बड़ी प्रतिमा क्रमश: स्प्रिंग टेम्पल बुद्ध (चीन) 153 मीटर, यूशिकु दाईबुत्शु(जापान) 120 मीटर, स्टैच्यू ऑफ लिबर्टी(अमेरिका) 93 मीटर, द मदरलैंड कॉल्स(रूस) 85 मीटर है। स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के अनावरण के साथ ही विरोध होना शुरू हो गया। विपक्ष जहां इसे फिजूलखर्ची बता रहे हैं तो वहीं केन्द्र सरकार इसे राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक बता रही है। प्रधानमंत्री मोदी की मानें तो यह प्रतिमा केवल मीटर और फीट के हिसाब से ऊंची नहीं है बल्कि शैक्षणिक, ऐतिहासिक, राष्ट्रीय एकात्मता और आध्यात्मिक लिहाज से भी काफी ऊंची है, जो आनेवाली पीढ़ियों को प्रेरणा देने का काम करेगी।

गौरतलब है कि सरदार की प्रतिमा का विरोध करने वाले विपक्षी पार्टियों के द्वारा इतिहास के पन्नों में विवादास्पद अध्याय माने जाने वाले टीपू सुलतान की जयंती मनायी जा रही है। जबकि देश में अनेक ऐसे मुद्दे हैं जिसपर विमर्श बेहद जरूरी है। सरकार के विरोध में महापुरूषों का अनादर कहां तक जायज है? राष्ट्रीय एकता के सूत्रधार सरदार पटेल की तुलना टीपू सुलतान से करना, क्या न्यायसंगत है? क्या विपक्ष सरकार के विरोध में दिशाहीन हो चली है? इन सभी मुद्दों को लेकर 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' के सहायक संपादक अजीत कुमार सिंह ने देशभर के बुद्धिजीवि, पत्रकार, शोधार्थी, छात्र, शिक्षक इत्यादि से बात की। प्रस्तुत है कुछ चुनी हुई प्रतिक्रियाएं –

"सरदार पटेल की प्रतिमा पर कोई राजनीति नहीं होनी चाहिए थी। इस बात को मान लेने में कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए कि सरदार पटेल को जो आदर दिया जाना चाहिए था वह नहीं दिया गया। लेकिन अगर आज ऐसा हो रहा है तो यह इस बात का प्रमाण है कि देश की राजनीति ही दिशाहीन हो चली है। सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों ही अपनी - अपनी राजनीति को जंचते हुए मुद्दे उठाते हैं। यह सब इस बात का परिणाम है कि आज राजनीति सोशल मीडिया पर चली गयी है। हाल के चुनावों मे टिकट बंटवारा भी उम्मीदवारों के सोशल मीडिया के फॉलोवर्स को देख कर हो रहा है। मीडिया में बहस भी आजकल मुद्दों पर न होकर किसी नेता के ट्वीट पर होती है। आपने सुना होगा अब कर्नाटक में कावेरी की प्रतिमा बनाने की बात हो रही है। गौरतलब हो कि कर्नाटक में सरकार काँग्रेस और जेडीएस की है। अब उन्हें प्रतिमा पर पैसा फिजूलखर्ची नहीं लगेगा। हर कोई अपनी राजनीति कर रहा है और उस राजनीति का स्तर दिन प्रतिदिन गिरता जा रहा है।

- **उत्कर्ष मिश्रा**, (वरिष्ठ पत्रकार, मुंबई)

2019 आम चुनाव के नजदीक आते ही विपक्ष के द्वारा अब नए मुद्दे सामने लाये जा रहे हैं। भारतीय राष्ट्रीय एकता के प्रतीक सरदार वल्लभ भाई पटेल की स्मृति में बनी स्टेच्यू ऑफ यूनिटी पर अब विपक्ष ने राजनीति शुरू कर दी है। एक ओर जहां कर्नाटक में मैसूर के शासक टीपू सुल्तान की जयंती मनाई जा रही है तो दूसरी ओर सरदार की स्मृति में बने विश्व के स्टैच्यू ऑफ यूनिटी का विरोध हो रहा है। सीधे तौर पर कहें तो तुष्टीकरण की राजनीति इस कदर हावी हो चुकी है कि टीपू प्यारे और सरदार किनारे हो गए हैं। टीपू सुल्तान के बारे में जो भारतीय जनमानस के विचार हैं वह निश्चित रूप से उनके बहुसंख्यकों के प्रति सकारात्मक नहीं होने के हैं। उन्हें पूर्व के सरकारों द्वारा एक नायक के रूप में प्रदर्शित किए जाने के उपरांत आज स्थिति ऐसी बन रही है कि भारत को संपूर्ण भारत बनाने वाले नायक भी इस राजनीति में टीपू से पीछे रह गए हैं। प्रतीकों की राजनीति में नायकों का बंटवारा भी पार्टियों के हिसाब से हो रहा है। सत्ता किसी का सम्मान कर रही है विपक्ष उनके खिलाफ अंधविरोध को मजबूर दिखता है। भारतीय राजनीति को विचार करने की आवश्यकता है कि वह सर्वव्यापी, सर्वस्पर्शी सरदार को स्वीकार करती है या बहुसंख्यक जनता के कोप भाजन टीपू सुल्तान को अपनाती है।

- **नवीन कुमार,** स्वतंत्र पत्रकार रांची।

एक तरफ तो विपक्ष कर्नाटक में टीपू सुल्तान की जयंती मना रहे हैं और दूसरी ओर सरदार पटेल की विशाल प्रतिमा पर प्रश्नचिन्ह कर ऊलजलूल बयानबाजी कर रहे हैं, ये उनके दिशाहीन रवैये को दर्शाता है। पूर्व में जब बहुत समय तक विपक्ष का एकाधिपत्य रहा, तब उन्होंने हर जगह चाहे वो शिक्षा का स्थान हो, या यात्रा का, प्रतिमाओं की बात हो या अवार्डों के नामों की, हर जगह सिर्फ "गांधी-नेहरू" के फलसफे का उपयोग किया। इसके अतिरिक्त जो हमारे देश के लिए शहीद हुए, जिनका भारत माँ के उत्थान में अद्भुत योगदान रहा, उन सभी के नामों को पूर्णतः नजरअंदाज कर दिया। महान क्रांतिकारी चंद्रशेखर आज़ाद, भगत सिंह, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, आदि कई महान योद्धा इन्हें कभी याद नहीं रहे। ये बड़ा सोचने योग्य विषय है कि सरदार पटेल जो जवाहरलाल नेहरू के प्रधानमंत्रित्व काल में ही उनके साथ उप प्रधानमंत्री और गृह मंत्री रहे, उनकी विशाल प्रतिमा पर विपक्ष विपरीत प्रतिक्रिया कर रहा है। लौह पुरुष और भारत के बिस्मार्क कहलाने वाले सरदार वल्लभभाई पटेल की 137वीं जयंती पर उनकी विशालकाय प्रतिमा के लोकार्पण के पश्चात कांग्रेस ने इस प्रतिमा की तुलना चीन के जूतों के साथ की.. जो बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण व शर्मनाक है। दूसरी ओर टीपू सुल्तान जो एक मुग़ल शासक थे, जिन्होंने करोड़ों हिंदुओं को धर्मांतरण करने पर मजबूर कर दिया, अनेकों लोगों का नरसंहार किया, उनकी जयंती मनाना विपक्ष के मूल्य, विचार व गुणों को दर्शाता है जो कभी भी जनहित, समाजहित व राष्ट्रहित में नही हो सकते।

- **ग्रीष्मा त्रिवेदी** (छात्रा, माता जीजाबाई स्नातकोत्तर महाविद्यालय, इंदौर)

भारतीय लोकतंत्र सदैव विविध संस्कृति, आचार-विचार एवं राष्ट्रीय जनमानस का परिचायक है। यहां रंग - रूप, भाषा, रहन-सहन आदि अलग-अलग है। लेकिन राष्ट्रीय हित, राष्ट्र परिकल्पना, पुनरुत्थान, समरसता आदि के मसले पर सभी को एक होने की जरूरत है। अगर पक्ष और विपक्ष में कोई असहमति या मतभेद भी हो तो उसे भुला कर एक स्वर में देश हित के मुद्दों पर समर्थन करना चाहिये। कोई भी सार्थक कार्य और महापुरुष किसी धर्म,जाति, भाषा या किसी के स्वार्थ सिद्धि के लिए के नही होते बल्कि देश हित के लिए होते है। आज गर्व से सीना चौड़ा होता है कि जब सरकार के द्वारा सबको एक सूत्र में बांधने वाले लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की विश्व स्तरीय मूर्ति स्थापित कर सकारात्मक सन्देश देने का कार्य कर रही है। वहीं दूसरी तरफ बहुत ही मन उदास होता है कि विपक्ष अपने मूल कार्य से दिशा विहीन होकर वोट बैंक की राजनीति के लिए टीपू सुल्तान को महान बनाने में लगा है। मेरा बहुत ही साफ मत है कि लौह पुरुष से टीपू सुल्तान की तुलना करना बहुत ही शर्मनाक कार्य है।

- **बिमलेश कुमार,** शोधार्थी, केन्द्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश।

परिषद् गतिविधि

अभाविप के प्रकल्प अंतर राज्य छात्र जीवन दर्शन (SEIL) के भूमि पूजन दौरान रा.स्व. संघ के सह सरकार्यवाह सुरेश सोनी जी, अभाविप के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राजकुमार भाटिया जी, राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुनील आंबेकर, राष्ट्रीय सह–संगठन मंत्री के. एन. रघुनंदन, श्रीनिवास एवं पूजारीगण

अभाविप के प्रकल्प एग्रीविजन के द्वारा आयोजित संगोष्ठी का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते अभाविप राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुनील आंबेकर, क्षेत्रीय संगठन मंत्री विक्रांत खंडेलवाल, एग्रीविजन प्रमुख सुरज भारद्वाज व अन्य

RNI No.: DELBIL/2017/73636
Date of Posting: 10-11 November, 2018
Date of Publishing: 8 November, 2018

Postal Regd. No.: DL(C)-11/1409/2017-2019
Post Office: NDGPO, New Delhi